जनवरी 2001 Rs. 10/-

चन्दामामा

नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

चन्दामामा

सम्पुट - १०३ जनवरी २००१ सञ्चिका - १

अन्तरङ्गम्

कहानियाँ

ज्ञानप्रद धारावाहिक

पौराणिक धारावाहिक

ऐतिहासिक विभूतियाँ

विशेष

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai-600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No.82, Defence Officers Colony, Ekattuthangal, Chennai - 600 097. Editor: Viswam

इस माह का विशेष

योग्य वर (वेताल कथा)

यक्ष पर्वत

भारत की गाथा

राजमार्ग

सबसे उत्तम

उपहार

आप अपने
दूर रहनेवाले करीबियों के लिए
सोच सकते हैं

चन्दामामा

उन्हें उनकी पसंद की भाषा में
एक पत्रिका दें

असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़,
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल व तेलुगु

और उन्हें घर से दूर घर के
स्नेह को महसूस होने दें

शुल्क
सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अकं 900 रुपये
भारत में भूतल डाक द्वारा
बारह अंक 120 रुपये

अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी आर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें
सेवा में :

PUBLICATION DIVISION
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
New 82 (Old 92), Defence Officers Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

संपादक
विश्वम

चन्दामामा पत्रिका विभाग
नया नं. 82 (पुराना नं.92),
डिफेन्स आफिसर्स कॉलोनी,
इक्काडुथंगल,
चेन्नई - 600 097.
फोन/फॅक्स : 234 7384/
234 7399
e-mail :
chandamama@vsnl.com

For USA
Single copy $2
Annual subscription $20
Mail remittances to
INDIA ABROAD
43 West 24th Street
New York, NY 10010
Tel: (212) 929-1727
Fax (212) 627-9503

The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the publishers and copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

संस्थापक

चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

नई सहस्त्राब्दी में स्वागत

वर्ष २००० नई शताब्दी का आरम्भ था या नई सहस्त्राब्दी का, अथवा यह वाद-विवाद का मामला ही नहीं था। आज कोई भी यह प्रश्न नहीं उठायेगा। क्योंकि यदि जनवरी २००० नहीं तो जनवरी २००१ तो निर्विवादित एवं निःसंदेह नए युग का आरम्भिक चिन्ह है।

इस समय जो सौ साल पूर्व घटित हो रहा था, उसके बारे में हम बहुत कुछ जानते हैं और बहुत कुछ नहीं भी। यह अलग दुनिया थी - जो कार, हवाई जहाज, रेडियो, टी.वी., इन्टरनेट, ई-मेल आदि के बिना ही चल रही थी। लेकिन हजार वर्ष पूर्व हमारा देश कैसा था? इस समय दो महान स्मारकों तंजाऊर के बृहदेश्वर मंदिर और भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर का निर्माण-कार्य तभी सम्पूर्ण हुआ। दूसरी ओर मुहम्मद गजनी ने बहुत सारे शहरों पर आक्रमण कर कई महत्वपूर्ण स्मारकों को नष्ट कर दिया।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो निर्माण और विनाश साथ-साथ चल रहे थे। अतः शताब्दी दर शताब्दी यही होता रहा। महान विचारकों ने उस समय कहा कि हमें अपने विनाशकारी आवेग की ओर नहीं झुकना चाहिए, बल्कि अपना समय किसी रचनात्मक कार्य में लगाना चाहिए। यदि सभी नहीं तो बहुत सारी समस्यायें हमारे मस्तिष्क में ही रहती हैं। हम कुछ विनाश करके ही उनका समाधान करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु इस प्रकार कोई समाधान नहीं मिलता है। उदाहरण के लिए भारत के विभाजन को ही देखिए। हमने सोचा कि देश का बँटवारा करके हिन्दू-मुस्लिम समस्या का हल हो जाएगा। परन्तु इस समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ। यह मामला और जटिल हो गया। मतभेद निरंतर चलता जा रहा है, क्योंकि यह समस्या मस्तिष्क में है, इस सुन्दर धरती पर नहीं।

यदि हम इस सत्य को ध्यान में रखें और यदि हम अपने मस्तिष्क को मानव की भाँति बना सकें और एक होकर जी सकें तो हम किसी भी अद्भुत वस्तु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यही नई शताब्दी और नई सहस्त्राब्दी की पुकार है। अंततः यह एक ही विश्व है। इसका विभाजन असम्भव है। जितनी जल्दी हम इसे समझ पाएँ, महसूस कर पाएँ, अच्छा होगा।
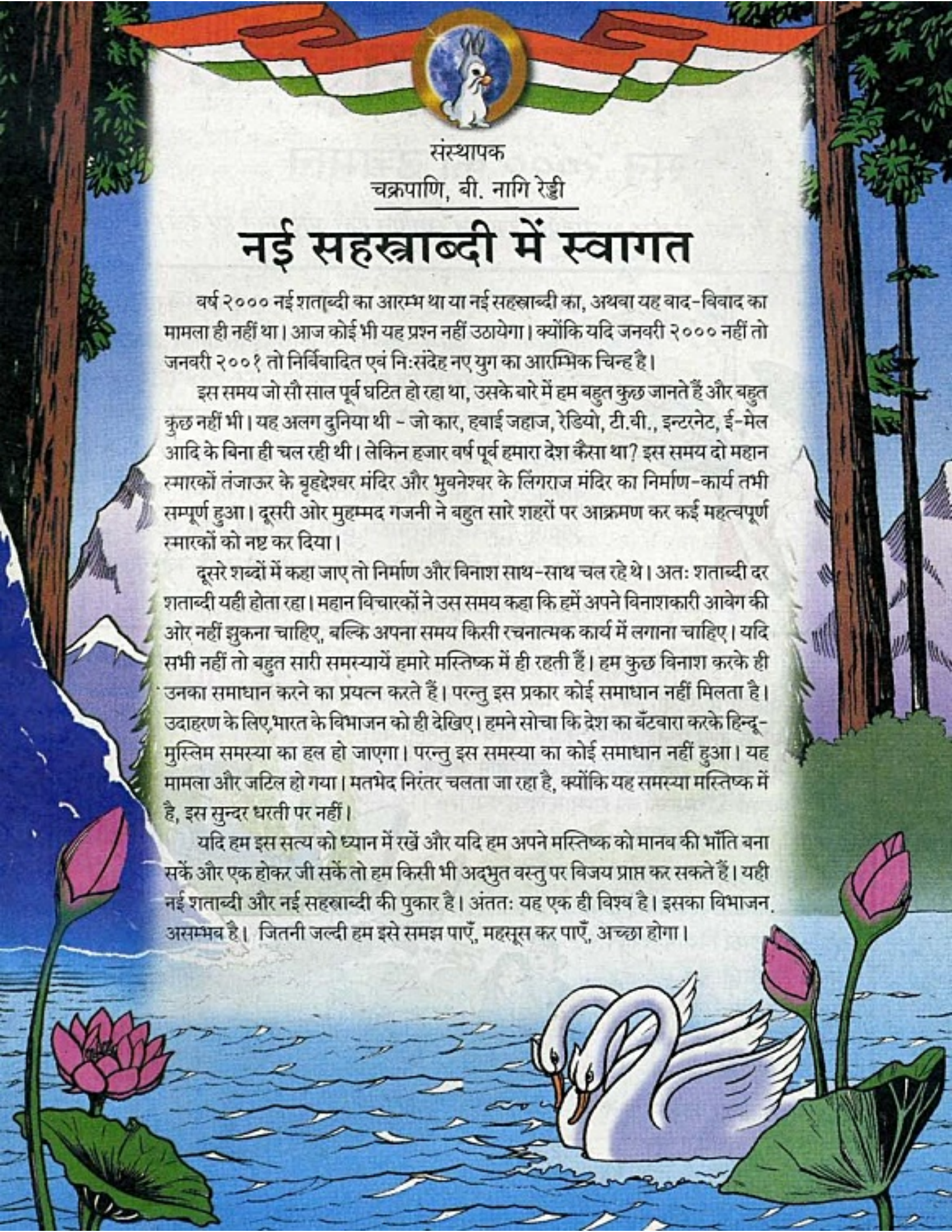
सन् २००० का उच्चमान

सन् दो हजार ने कुछ अद्भुतपूर्ण उच्चमान स्थापित होते और बनते हुए देखे।

● लाउडिस्पीकर को १०४ घंटे तक पकड़े रहना कैसा था? मलेशिया के "डिस्क-जोकी" बरहन मोहतरूद्दीन ने अक्टूबर में यह कर दिखाया। वह कालालम्पुर के बेस्ट १०४ रेडियो पर काम कर रहा था। उसने रविवार को डिस्क बजाना आरम्भ किया और उसमें संगीत तथा गीत के बारे में बताकर अपनी वाक्पटुता से लोगों को रिझाता रहा। उसका यह कार्यक्रम आगामी शुक्रवार को समाप्त हुआ। यह सही है कि छः घंटे के बाद वह १५ मिनट का विश्राम लेता था। कुछ भी कहें पिछला उच्चमान इससे १० घंटे कम था।

● लार्स गॉयरन कार्लसन स्वीडेन के अभिनेता हैं जो फिल्मों में संवाद बोलने के लिए प्रसिद्ध हैं। सितम्बर में मालवों में आयोजित पुस्तक मेले में उन्हें एक कहानी ऊँची आवाज में पढ़ने के लिए कहा गया। वह बच्चों के बीच में नहीं बल्कि बड़ों के बीच में कहानी पढ़ रहे थे। पुस्तक मेले में स्वीडेन के एक जाने-माने लेखक आगस्ट स्ट्रीन्डवर्ग की पुस्तकों को सम्मान दिया गया। कार्लसन को पाँच किताबें दी गईं और उन्होंने २५ घंटे तक लगातार वे किताबें पढ़ीं। शनिवार से आरम्भ कर रविवार तक केवल एक घंटे के बाद ५ मिनट का विश्राम लेकर।

पहला उच्चमान २४ घंटे २४ मिनट था। सौभाग्य से कार्लसन की आवाज नहीं गई। परन्तु वह कहीं सो न जाए उसके लिए काफी परेशानी हुई। उसके श्रोताओं का क्या हाल था ? यह एक आश्चर्य है।

● आस्ट्रिया के हैन्स श्वार्ज द्वारा एक संदेश लिखा गया। जो उसी के पास पोस्ट द्वारा ४४ सालों बाद वापस पहुँच गया। श्वार्ज १९५६ का मेलबर्न ओलम्पिक खेल देखने जाने के लिए एक जहाज पर चढ़ने वाला था, अतः उसने इस संदेश को एक बोतल में सील करके हिन्द महासागर में फेंक दिया। हो सकता है समुद्र इसे कहीं भी ले गया हो परन्तु श्वार्ज को अपने जीवन पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। क्योंकि आस्ट्रिया छोड़ने के बाद जहाँ ज़ाकर वह बस गया था, वहाँ से कुछ ही दूरी पर न्यूजीलैण्ड के समुद्री तट पर वह बोतल पड़ी हुई मिली। "यह करोड़ों में किसी एक के साथ होता है।" उन्होंने यह टिप्पणी तब की जब अक्टूबर में उन्हें इसके बारे में सूचना दी गई।

● जबकि अधिकतर एवरस्ट यात्रियों को चढ़ने में २ से ४ दिन तक लग जाता है, वहीं शेरपर बाबू छिरी को चढ़ने में १७ घंटे में ४ मिनिट कम लगा। उसने अपना उच्चमान सन २००० के एवरेस्ट चढ़ाई के दौरान स्थापित किया। यह सबसे तीव्र चढ़ाई मानी जाती है। ३४ वर्ष के छिरी के लिए यह कोई पहला रिकार्ड नहीं है। उन्होंने अपनी पहली चढ़ाई १३ वर्ष की आयु में पूरी की। उस समय वह एक विदेशी दल का द्वारपाल था। १९८९ में वह अकेले गया और तभी से वह १० बार एवरेस्ट पर चढ़ा। १९९५ में वह १४ दिनों में दो बार चढ़ाई चढ़ा। १९९९ में वह प्रथम व्यक्ति था जो २१ घंटे बिना आक्सीजन बोतल के ऊँचाई पर ठहरा था। वह बड़ा ही आश्चर्यचकित हुआ जब उसने यह सोचा कि अन्य एवरेस्ट यात्री कितनी देर तक वहाँ रुक सके। छिरी यह सब एक अन्य ध्येय से कर रहा है। वह अपने गाँव के बच्चों के लिए एक विद्यालय बनवाना चाहता है, क्योंकि उसे स्वयं स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला।

सच्चा पड़ोसी

एक धनी व्यक्ति ने शहर से दूर एक नया मकान खरीदा। वह शांति प्रिय व्यक्ति था, इसलिए वह खुश था कि इस स्थान पर बहुत कम घर थे। इस पर भी उसके घर के आस-पास दो झोंपड़ियों को छोड़कर और कोई घर नहीं था, जो उसके मकान के दोनों ओर बनी थीं।

लेकिन उसकी खुशी रात को समाप्त हो गई। एक झोंपडी से हथौड़े चलने तथा दूसरी सेआरी चलने की आवाज लगातार आती रही।

उसके नौकर द्वारा प्रात:काल की गई पूछ-ताछ से पता चला कि पूर्वी की ओर स्थित झोंपड़ी में लकड़ी का सामान बनाने वाला रहता है और पश्चिम वाली झोंपड़ी में एक लुहार। दोनों बहुत गरीब हैं।

धनी व्यक्ति ने सबसे पहले लकड़ी के सामान बनाने वाले को बुलाया और पूछा, "क्या तुम वादा करते हो कि यदि मैं तुम्हें एक हजार रूपए दूँ तो, तुम यह स्थान छोड़कर कहीं और चले जाओगे?"

"खुशी से श्रीमान", उससे कहा। वह पैसा लेकर चला गया।

उसके बाद धनी व्यक्ति ने बढ़ई को बुलाया और वैसा ही प्रस्ताव उसके सामने भी रखा। वह भी तुरन्त मान गया और इनाम लेकर चला गया।

उस रात धनी व्यक्ति अपने को बधाई देते हुए सोने के लिए चला गया, और सोचा कि अब उसकी निद्रा भंग नहीं होगी।

लेकिन वह घबराकर उठ गया। वहाँ शोर बहुत था और वह लगातार चलता रहा। सुबह उसने अपने नौकर को बुलाया और इसके बारे में पूछा।

"उन लोगों ने अपना स्थान बदल लिया।बढ़ई लकड़ी वाले की झोंपड़ी में चला गया और लकड़ी वाला बढ़ई की झोंपड़ी में। ये लोग उनमें से नहीं हैं जो अपने वादे को पूरा करें।" नौकर ने बताया।

वेताल
कहानी

योग्य वर

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ पर चढ़ा, शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अन्दर के वेताल ने कहा राजन्, आधी रात का समय है,तिसपर यह श्मशान है। यहाँ भूत-प्रेतों का संचार होता रहता है। किसी भी क्षण तुम विपत्तियों से घिर सकते हो। तुम्हारी जान जाने की भी संभावना है। क्या ऐसी कोई क्लिष्ट समस्या है, जिसका समाधान ढूँढने के लिए इतनी कड़ी मेहनत कर रहे हो? श्मशान छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहे हो? एक बात ध्यान से सुनो। कुछ लोग ऐसे होते हैं,जो साधारण समस्या को भी असाधारण समस्या समझा करते हैं और

परेशान हो जाते हैं। इसका कारण उनकी अनुभव-शून्यता, न सोच समझ की शक्ति हीनता है। कहो तुम भी ऐसी ही ग़लती तो नहीं कर रहे हो? यह केवल मेरा संदेह मात्र है, किन्तु अगर यह सच हो तो मैं तुम्हें सावधान करना चाहूँगा। मुझसे एक गरीब की बेटी मालती की कहानी सुनो, जिसने सोचे विचारे बिना अपने भाग्य को ठुकराया, अपने ही हाथों अपना सर्बनाश किया। थकावट दूर करते हुए यह कहानी सुनते जाना। फिर बेताल मालती की कहानी को सुनाने लगा।

विंध्याचल के जंगल के समीप एक लकड़हारा अपनी इकलौती बेटी मालती के साथ रहा करता था। मालती की माँ उसके बचपन में ही गुजर चुकी थी। लकड़हारा अपनी बेटी के विवाह को लेकर हमेशा बहुत ही चिन्तित रहा करता था।

एक बार पास ही के एक गाँव में रहनेवाली उसकी दीदी बीमार पड़ी। वह गाँव उस गाँव से ज्यादा दूर नहीं था, जहाँ उसकी दीदी रहती थी। अपनी दीदी को देखने दूसरे दिन सबेरे ही निकलते हुए उसने अपनी बेटी मालती से कहा, "गाय ब्यानेवाली है, इसीलिये तुम्हें यहाँ अकेली छोड़कर दीदी को देखने जा रहा हूँ। किसी भी हालत में रात को वापस आ जाऊँगा।

स्नान करने के बाद अपने केशों को सुखाती हुई मालती झोंपडी के बाहर इधर-उधर घूमती रही। इतने में बादल घिर आये और ठंडी हवा चलने लगी। वह चमेली के पुष्पों को माला में गूँथती हुई मधुर स्वर में गाने लगी। गाना खतम होते-होते उसने माला भी पिरो दी, जब वह उस माला को अपनी वेणी में सजा रही थी, तब एक स्वर सुनायी पड़ा, "तुम्हारे कंठस्वर को सुनकर कोयल भी शरमा गया। वाह, कैसा मधुर स्वर है!" इन बातों को सुनकर वह एकदम घबरा उठी उसका शरीर डर के मारे कांप उठा।

वह मुड़कर उसी तरफ़ देखने लगी कि इतने में उस युवक ने अपना परिचय देते हुए कहा, "मेरा नाम सारंगपानी है। बड़ा ही संगीत प्रिय हूँ। तुम्हारा मधुर स्वर सुनकर मैं मुग्ध हो गया हूँ। इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ।"

मालती को सूझा नहीं कि इसका क्या जवाब दिया जाए। इतने में मूसलाधार बारिश होने लगी। मालती ने तुरंत उस युवक से कहा, "बाप रे, आप तो पूरा भीग गये। अन्दर आइये।" उसने यों उस अपरिचित व्यक्ति को अंदर आने के लिए निमंत्रण दिया।

सारंगपानी दौड़ता हुआ झोंपड़ी के अंदर

आया। बिशाल और साफ-सुथरी झोंपड़ी को देखते हुए उसने कहा, "बहुत ही सुन्दर कुटीर है। इस जंगल में अकेले रहते हुए आपको डर नही लगता?"

"यहीं पैदा हुई और बड़ी हुई। डर किस बात का? मेरे साथ मेरे पिताजी भी यहीं रहते हैं।" कहती हुई उसने सुतली हुई चारपाई बिछायी।

इतने में झोंपड़ी के बाहर से एक आवाज़ आयी, "अंदर कोई है? बारिश कम होती नहीं दीखती। अंदर आ सकता हूँ?"

मालती ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि बाहर कामदेव की तरह एक अति सुन्दर युवक खड़ा है। उसने उसका स्वागत करते हुए कहा, "आइये, लगता है,आप पूरा भीग गये।"

जंगल में ऐसी अद्‌भूत सुन्दरी को देखकर वह चकित रह गया। उसके आश्चर्य की सीमा न रही। अपने को संभालते हुए उसने कहा, "मेरा नाम सुंदरकपिल है। मित्र के विवाह पर जा रहा था और यों इस बारिश में फंस गया।" अंदर आते हुए उसने कहा ।

"आप ही की तरह बारिश में फंसे सज्जन हैं, ये भी", फिर उसने दोनों का परिचय एक-दूसरे से कराया।

उसी क्षण एक तीसरा युवक भी यह कहता हुआ अंदर आ गया "अनुमति के बिना ही अंदर प्रवेश कर रहा हूँ। इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।" वह भी बर्षा में पूरा भीग चुका था।

मालती उसे देखकर कुछ कहने ही वाली थी कि इतने में उसी युवक ने कहा, "मेरा नाम भीमशंकर है। व्यापार से संबधित काम पर शहर जा रहा हूँ। इस बारिश में फंस गया। पता नहीं यह वर्षा कब थम जायेगी?"

थोड़ी देर में बारिश कम होती गयी। उसे भेजने बाहर आयी मालती से सारंगपाणि ने कहा, "तुम्हारा मृदु मधुर मंजुल गीत अब भी मेरे कानों में गूँज रहा है। तुम मुझे बहुत पसंद आयी हो। कल मैं अपने बड़े भाई को आपके पिता से बात करने भेजूँगा।" धीरे से बताकर वह वहाँ से चला गया।

सुंदर कपिल ने जाने के पहले कहा, "तुम्हारा सौंदर्य अद्वितीय है। मेरे सौंदर्य की बराबरी की वधु मिलेगी या नही। मेरे लिए एक समस्या बनी हुई थी। अब उस समस्या का हल हो गया। हमारे विवाह के संबंध में बात करने कल ही अपने माता-पिता को भेजूँगा।" रहस्यपूर्बक उसके कानों में यह बात बताकर वहाँ से चल पड़ा।

भीमशंकर ने भी जाने के पहले कहा, "तुम मुझे बहुत अच्छी लगी हो। मैं बहुत बड़ा व्यापारी हूँ। लाखों में मेरा व्यापार चलता है। मेरा व्यापार संभालने के लिए मेरे यहाँ कितने ही नौकर-चाकर हैं। जब कभी भी अपने व्यापार के कार्य-कलापों से ऊब जाऊँगा तब यहाँ आकर विश्राम लूँगा। तुम्हारे साथ सुखमय जीवन बिताऊँगा। कल ही अपने माता और सभी को हमारी शादी के बारें में बात करने भेजूँगा।" मालती को एकटक देखते हुए वहाँ से वह भी चला गया।

शाम को जब मालती गाय को चारा खिला रही थी तब उसका लकड़हारा पिता वापस आया। उसने पूछा, "फूफी कैसी हैं?"

"शायद बहुत दिनों तक जिन्दा नहीं रहेगी। उसे इस बात का रंज है कि शायद वह अपने एकलौते बेटे की शादी देख नहीं पायेगी।" लकड़हारे ने कहा।

मालती ने कहा, "इस बात पर इतना दुखी होने की क्या आवश्यकता है? कोई लड़की उसे अच्छी लगे तो तुरंत अपने बेटे की शादी कर दें।

"अपने बेटे की शादी के बारे में मेरी दीदी ने ज़रूर ग़लती की। वह सोचती थी कि उसे बहुत दहेज मिलेगा। किन्तु अब उसकी उम्मीदें टूट गयीं। मैंने भी तुम्हारी शादी उसके बेटे से करने के लिए पूछने का साहस नहीं किया, क्योंकि दहेज देने की हालत में हम नहीं हैं। अब उसी ने यह बात उठायी और कहा कि यह शादी हो जाए तो आराम से आँख मूँद लूँगी। मैने भी हाँ कह दिया। रमापति जानना चाहता है कि क्या तुम्हें यह शादी पसंद है?"

मालती ने मुस्कुराकर कहा, "आज सबेरे यहाँ भारी वर्षा हुई थी। वर्षा में भीगे तीन अतिथियों ने झोंपड़ी में शरण ली। उनमें से एक संगीत प्रिय है, दूसरा बहुत ही सुंदर है और तीसरा है एक व्यापारी। इनमें से हर एक ने मुझसे शादी करने की इच्छा प्रकट की और इसके बारे में आपसे बातें करने अपने-अपने लोगों को कल यहाँ भेजनेवाले हैं।"

"ऐसी बात है! वे तीनों अवश्य धनी ही होंगे। बेमतलब की बातें करनेवाले रमापति की बातें भूल जाओ। उन तीनों में से किसे तुम योग्य वर मानती हो?" लकड़हारे ने बेटी से पूछा।

थोड़ा भी बिलंब किये बिना मालती ने अपने पिता से कहा, "मैं रमापति से ही शादी करूँगी।"

वेताल ने यह कहानी सुनाकर राजा से पूछा, "राजन्, यह तो स्पष्ट है कि अपने विवाह के

बारे में मालती ने बड़ी भूल कर दी। वे तीनों धनवान हैं, गुणी हैं। मालती को चाहिये था कि वह उन तीनों में से किसी को अपना पति चुने और उससे विवाह करे। ऐसा अगर वह करती तो उसका जीवन आराम से कट जाता। किन्तु ऐसा न करके उसने अनपढ़ रमापति से शादी करने की इच्छा प्रकट की। जीवन-साथी को चुनने की यह समस्या क्लिष्ट समस्या है, यह उसके भविष्य से संबंधित समस्या है, किन्तु ऐसी समस्या को उसने बिल्कुल ही साधारण समस्या मान ली और बिना सोचे-विचारे अपना निर्णय सुना दिया। भाग्य को ठुकरा दिया, भविष्य को अंधकारमय बना लिया। अपने हाथों उसने अपना सर्वनाश किया। मेरे इन संदेहों को जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''कौन सी समस्या क्लिष्ट है, पेंचीदी है, और कौन सी समस्या साधारण है, सरल है, यह उन-उन व्यक्तियों के मानसिक स्तर और स्थित पर निर्भर हो रहे हैं। अपने अनुभवों के आधार पर वे विवेकपूर्ण निर्णय लेते हैं। पिता के प्रश्न का उत्तर देने में मालती ने कोई अनाकानी नहीं की। उसने रमापति से ही बिवाह रचाने का अपना निर्णय क्षण भर में सुना दिया। क्योंकि उसकी दृष्टि में यह कोई असाधारण समस्या नहीं, बल्कि साधारण समस्या है। इसके पीछे एक प्रबल कारण है। वे तीनों उससे विवाह करना चाहते थे लेकिन उन तीनों में से किसी ने भी यह जानना नहीं चाहा कि उसकी क्या इच्छा है, उसकी क्या प्रतिक्रिया है। रमापति ही एक ऐसा व्यक्ति था, जो शादी के बारे में मालती की इच्छा जानना चाहता था। जिन लोगों ने शादी के पहले उसकी इच्छा जानने की कोई ज़रूरत ही महसूस नहीं की, पता नहीं शादी के बाद उसके प्रति उनका क्या रूख होगा और उससे वे कैसा बरताव करेंगें। हो सकता है, वे उसे अर्धांगिनी का दर्जा न दें, उसे मामूली दासी समझें। इसलिए तुम्हारा यह कहना बिल्कुल निराधार है कि उसने अपने हाथों अपना सर्वनाश किया अथवा अपने भाग्य को ठुकराया।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार वसुंधरा की रचना

इस माह जिनकी जयंती है

"बीते हुए भारत को हम दुबारा नहीं ला सकते। लेकिन भारत के भविष्य को हम अवश्य संवार सकते हैं। जिस भारत का जन्म होगा, उसमें रंग और धार्मिक भेदभाव जैसे मतों के लिए कोई स्थान नहीं होगा, सर्वप्रथम हम भारतीय हैं और भारतीय ही रहें।"

यह सत्यपूरित वाक्य आज से सौ साल पूर्व एक महान समाज सुधारक और शिक्षाविद महादेव गोविन्द राव रानडे ने कहा। इनका अनुसरण करने वाले सभी नेताओं के भाषण में इनके द्वारा कही गई अंतिम पंक्ति के शब्द गूँजते रहे।

महादेव गोविन्द रानडे

समाजसुधार में इन्होंने महिलाओं की शिक्षा पर बल दिया। समाज उस समय काफी रूढ़िवादी था और इस प्रकार के कार्य और मत के तात्पर्य को समझ न सका। उन्होंने निर्णय लिया कि वे स्वयं एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने अपनी ग्यारह वर्षीय पत्नी रमादेवी को पढ़ाना आरम्भ किया, जो अनपढ़ थीं। घर की अन्य महिलाएँ उस समय काफी क्रोधित हुई, जब उन्होंने एक अंग्रेज़ महिला से आकर छोटी रमादेवी को पढ़ाने के लिए पूछा। उन लोगों ने कहा कि जब भी वह अंग्रेज़ औरत वापस जाएं रमादेवी को स्नान करना चाहिए।

महादेव का जन्म १८ जनवरी, १८४२ को नासिक जिले के नफाड स्थान पर हुआ। उनके पिता गोबिन्दराव रानडे कोल्हापुर एस्टेट के प्रशासक थे। जब महादेव १३ वर्ष के थे तो उन्हें बम्बई में एल्फीन्स्टन संस्थान में प्रवेश दिलाया गया। उन्होंने वहाँ एम.ए., एल.एल.बी. और एल.एल.बी. विशेष की परीक्षा पास की। अपनी सभी परीक्षाओं में उन्हें विशिष्टता प्राप्त हुई।

अपने सम्पूर्ण विद्यार्थी जीवन में वे छात्र वृत्ति प्राप्त करते रहे। उसके बाद उन्होंने बहुत सारे गरीब विद्यार्थियों को धन से सहायता की। समाज सुधार के कार्य के कारण उन्हें सदा आलोचना का शिकार होना पड़ता था। लेकिन वे इसे बिना किसी विरोध के स्वीकार करते थे।

वे बहुत ही क्षमाशील व्यक्ति थे। एक बार जब वे प्रेजीडेन्सी मजिस्ट्रेट के पद पर कार्य करते हुए रेलगाड़ी के प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहे थे, तभी एक अंग्रेज़ अधिकारी जो उस डिब्बे में चढ़ा, उसने उठाकर उनका सारा सामान फेंकना आरम्भ कर दिया। रानाडे ने कोई विरोध नहीं किया और जाकर दूसरे डिब्बे में बैठ गए।

एक बार उन्होंने ५० रु. की चोरी करने पर एक अंग्रेज़ व्यक्ति को छः महीने के कारावास का दण्ड दिया, जबकि इससे पहले उन्होंने एक भारतीय को १०० रुपए चोरी करने पर मात्र एक महीने का कारावास दिया। पक्षपात का आरोप लगाकर जब उनकी आलोचना की गई तो उन्होंने कहा अंग्रेज व्यक्ति ने यह चोरी पूरी योजना के साथ की जबकि भारतीय व्यक्ति को प्रलोभन दिया गया और उसने चोरी की।

ए.ओ. ह्यूम द्वारा जब कांग्रेस की स्थापना हुई तो सरकारी पद पर नियुक्त होने के कारण उन्होंने अनाधिकारीय रूप से उसमें प्रवेश किया। कांग्रेस की उन्नति में उनके सहयोग के लिए श्री ह्यूम उन्हें अपना 'राजनीतिक गुरु' पुकारते थे। भारत के इस सच्चे सपूत का १६ जनवरी १९०१ में देहान्त हो गया।

यक्ष पर्वत

लगभग सौ वर्ष पूर्व नर्मदा नदी तट के पास के जंगलों में आदिवासी लोग रहा करते थे। इन्ही जंगली जातियों में से गण्डक मृग जातिवाले भी थे। उन्होंने जंगल में अपना अलग गाँव बसाया, जिसका नाम रखा गया अरण्यपुर। वे गण्डक मृगों को पालते थे और उन्ही से खेती का भी काम करवाते थे। उन्हीं पर बैठकर यात्राऐं भी करते थे। इसी कारण उनकी जाति गण्डक मृग जाति कहलायी गयी।

इस जाति का नया राजा बना अरण्यमल। इसी जाति का गणचारी नामक व्यक्ति उसे अधिकारच्युत करने की कोशिश में लगा हुआ था। दो क्षत्रिय युवकों की सहायता से अरण्यमल ने गणाचारी के षडयंत्र का राज़ खोल दिया और उसे मरवा डाला। उसका मृत शरीर बाघ का आहार बना।

अरण्यमल्ल को सिंहासन पर आसीन हुए एक साल गुज़र गया। गण्डक जातिवालों ने उस दिन वार्षिकोत्सव मनाने की ठानी और इसके लिए आवश्यक प्रबंध किया गया। एक टीले पर सुसज्जित सिंहासन पर उसे बिठाया और वे उत्सव मनाने लगे। अरण्यमल की खुशी का ठिकाना न रहा। इतना आदर पाकर वह मन-ही-मन गर्व महसूस करने लगा।

ऐसे समय पर गण्डकमृग जाति के दो युवक मृगों पर बैठकर तेज़ी से वहाँ आये। उतरकर वे सीधे अरण्यमल की ओर बढ़ने लगे। अरण्यमल का शिलामुखी नामक एक मंत्री था। उसने उन युवकों को रोका और उनसे कहा, ''क्या भूल गये कि यहाँ मंत्री बैठा हुआ है। मेरी अनुमति के बिना ही राजा से मिलना चाहते हो? कदापि

संभव नहीं।''

युवकों में से एक ने कहा, ''महोदय, पहाड़ के पास के हमारे ज्वार के खेतों में कुछ नये लोग घुस आये और भुट्टों को तोड़कर ले जा रहे हैं। हमने आज तक उन नये जंतुओं को नहीं देखा, जिनपर वे सवार होकर आये।''

मंत्री शिलामुखी ने पूछा, ''उन नये जंतुओं की ख़ासियत क्या है? असल में वे होते कैसे हैं?''

''वे हाथी जैसे ऊँचे हैं। बाघ की तरह के उनके पैर हैं। बगुलों की तरह उनके भी गले टेढ़े हैं और लंबे भी।'' आगतों ने आश्चर्य भरे स्वर में उनका वर्णन किया।

शिलामुखी उन दोनों को राजा के पास ले गया और उसे उन नये जंतुओं के बारे में पूरा बिवरण सुनाया।

''हमारे लोगों ने बहुत मेहनत की और फ़सल उगायी। उन लुटेरों की इतनी हिम्मत कि वे हमारी फ़सल लूटकर ले जाएँ। तुम लोगों को उनपर तुरंत धावा बोलना था, उल्टे उन विचित्र जंतुओं को लेकर आश्चर्य प्रकट कर रहे हो?'' अरण्यमल ने नाराज़ होकर कहा।

अरण्यमल के ऐसा कहने पर जनता को संबोधित करते हुए मंत्री ने ऊँचे स्वर में कहा, ''सुनो, सुनो, अब हम यह उत्सव रोक दें। लुटेरे हमारी फ़सल लूटकर ले जा रहे हैं। उनका नाश करके हमें अपनी फसल को बचाना है। यह हमारा प्रथम कर्तव्य है।''

मंत्री से ये बातें सुनते ही गण्डक मृग जाति के लोग उत्तेजित हो उठे। वे भाले, तलवारें और धनुष-ब्राण लेकर गण्डकमृगों पर बैठकर निकल पड़े। मंत्री शिलामुखी भी उनके साथ-साथ गया।

वे सब जब अपने खेतों के पास पहुँचे तब वहाँ का दृश्य देखकर घबरा गये। वे ड़र के मारे रुक गये। कुल लुटेरों की संख्या होगी लगभग पचीस से लेकर तीस तक। वे भुट्टों को तोड़कर उन विचित्र जंतुओं की पीठों पर लदी थैलियों में भर रहे थे।

लुटेरों ने भी देखा कि गण्डकमृग जाति के लोग भाले, तलवारें और धनुष-बाँण लिये आ रहे हैं और किसी भी क्षण उनपर आक्रमण करनेवाले हैं तो वे भी भयभीत हो गये। अब दोनों मन ही मन एक-दूसरे से डरने लगे।

लुटरों में से एक ने भाला उठाकर शत्रुओं की ओर दिखाते हुए अपने लोगों से कहा, "देखो, उधर देखो! निर्भय होकर जब ये लोग गण्डक जैसे खूंख्वार जानवरों को ही अपनी सवारी बनाकर निधड़क आ-जा सकते हैं तब हम अनुमान लगा सकते हैं कि वे कितने सहसी हैं! हम उनके सामने कैसे टिक सकते हैं?"

लुटेरों के सरदार ने गण्डकमृग जाति के लागों को ग़ौर से देखा। उसे लगा कि वे उनपर हमला करने के लिए आनाकानी कर रहे हैं; उधेड़बुन में हैं; शायद साहस नहीं कर पा रहे हैं। उनकी इस असमंजसता का लाभ उठाने के उद्देश्य से लुटेरों के सरदार ने अपने अनुचरों से कहा, "ओ उष्ट्रवीरो, गण्डकमृग जातिवाले हमें देखकर डर रहे हैं। हमपर हमला करने से झिझक रहे हैं। खुद देख लो। एक भी आगे बढ़ने का साहस नहीं कर रहा है। यही अच्छा मौक़ा है। घेर लो और उन्हें तितर-बितर कर दो।"

शिलामुखी आगे बढ़ते हुए उन शत्रुओं को देखकर थर-थर कांपने लगा। उसने अपने लोगों से कहा। "इतने ऊँचे जंतुओं पर सवार ये लोग आसानी से हमें खत्म कर देंगे। लौटो और दूर के उन पेड़ो के पीछे छिप जाओ!"

शिलामुखी अपने गण्डकमृग को घुमाये, इसके पहले ही लुटेरे तेज़ी से वहाँ पहुँच गये और उन्हें घेर लिया। शिलामुखी साहसपूर्वक उनका मुक़ाबला करता रहा और जय अरण्यमाता कहकर चिल्लाता हुआ अपने अनुचरों से बोला, "इन लुटेरों
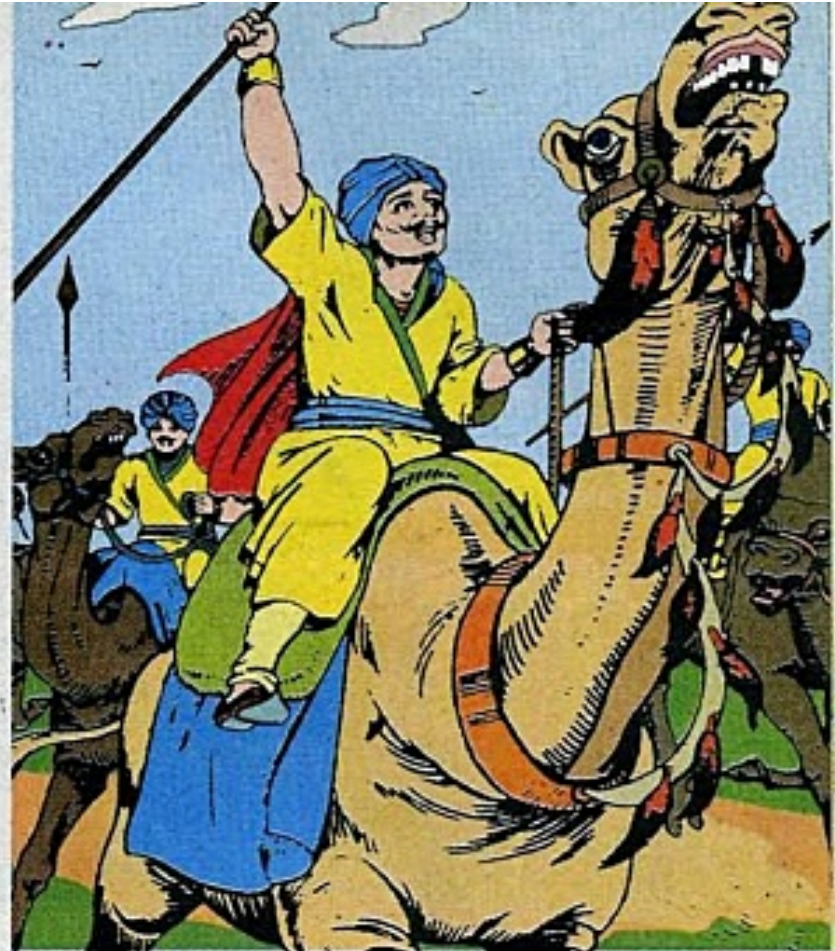
का सामना करना हमारे बस की बात नहीं है। भागो अरण्यपुर की ओर!"

तब पास ही के पेड़ की डालियों में से एक आवाज़ सुनायी पड़ी, "महामंत्री शिलामुखी, डरो मत! भागो मत! लुटेरे जिसपर सवार होकर आये हैं, उन्हें ऊँट कहते हैं। इनके बारे में मैं पहले ही सुन चुका हूँ। वे कोई भयानक जंतु नहीं हैं। अपने गण्डक को पीछे घुमाओ और तुम्हारे पीछे-पीछे आते हुए ऊँट से भिड़ा दो। गण्डक अपनी सींगों से उसे घायल कर देगा। उसकी सींग बज्रायुध की तरह कठोर है।"

शिलामुखी को यह जानने में देर नहीं लगी कि वह आवाज़ क्षत्रियों के पास ही के कुटीर में रहनेवाले स्वर्णाचारी की आवाज़ है। किन्तु लुटेरों से लड़ने का साहस उसमें नहीं रहा। वह अपने

अनुचरों के साथ-साथ अरण्यपुर की ओर भागने लगा।

स्वर्णाचरी की चेतावनी को लुटेरों के सरदार ने सुन लिया था। वह उस पेड़ के पास गया, जहाँ स्वर्णचारी छिपा हुआ था। वह चिल्लाकर बोला "कौन हो तुम? हमारे ही शत्रुओं को उपाय सुझा रहे हो? आहा, तुम तो बड़ी अक़लमंदी से भरी बातें कर रहे हो"। कहता हुआ वह ऊँट पर चढ़ गया और भाला ऊपर उठाया।

स्वर्णाचारी भय से काँपने लगा। पेड़ पर से उतरते हुए वह कहने लगा, "भाई, मुझे मारकर पाप न कीजियेगा। सभी शास्त्र कहते हैं कि वास्तुविद् को मारने से नरक मिलेगा।"

सरदार ज़ोर से हँस पड़ा और कहा, "इतने बड़े वास्तुविद् हो तो तुम्हें शहरों में रहना था। इस अरण्य में, इन चट्टानों के बीच में तुम्हें घूमने-फिरने की क्या आवश्यकता है?

"देखिये श्रीमान! गृह-निर्माण कार्य से मेरा और मेरे परिवार का पेट भर नहीं रहा है। इस पेशे से मैं कुछ खास कमा नहीं पा रहा हूँ। यंत्र निर्माण के रहस्यों की भी मुझे जानकारी है। विघ्नेश्वर पुजारी की सहायता से मैंने एक मायावी हाथी की सृष्टि की है। किन्तु दो क्षत्रिय युवकों ने मेरे इस प्रयत्न को भी विफल कर दिया। मेरे पेशे को उनके कारण बड़ी हानि पहुँची। इसीलिए मैंने पद्मपुरी छोड़ दिया और इसअरण्य में आ गया। पास ही के एक कुटीर में वे दोनों क्षत्रिय युवक रह रहे हैं। उनसे थोड़ी दूरी पर मैंने और विघ्नेश्वर पुजारी ने वास्तु सम्मत एक गृह का निर्माण किया और उसी में हम दोनों रह रहे हैं" स्वर्णाचारी ने बताया।

वे क्षत्रिय युवक यहाँ रहकर क्या कर रहे हैं? वे कहीं तपस्या तो नहीं कर रहे हैं?" सरदार ने पूछा।

"भला उन्हें तपस्या करने की क्या आवश्यकता है। वे दोनों क्षत्रियोचित विद्याओं में सिद्धहस्त हैं। शिष्टों की रक्षा करना उनकी दैनिक वृत्ति है", स्वर्णाचिारी ने कहा।

सरदार ने व्यंग्यपूरित वाणी में पूछा, "गण्डकमृग की जाति के लोगों की फ़सल को लूटना क्या दुष्टकार्य माना जाता है?"

उसका जवाब देने में स्वर्णाचारी थोड़ी देर तक सकपकाया और फिर बोला, "आपने बड़ा

ही जटिल सवाल पूछा "यह अर्थभरित मर्म भरा प्रश्न है। मेरी समझ में नहीं आता कि इसका क्या उत्तर दूँ ?"

"अच्छा, मुझे उन क्षत्रियों के निवास स्थल पर ले जाओ !", सरदार ने उसे आज्ञा दी।

स्वर्णाचारी ताड़ गया कि सरदार उन दोनों क्षत्रिय युवकों को मार डालना चाहता है, किन्तु विवश होकर उनके कुटीर की ओर बढ़ा। उस कुटीर के पास पहुँचने के पहले स्वर्णाचारी चाहता था कि उन युवकों को सावधान कर दूँ, जिससे वे सतर्क हो जाएँ और अपनी रक्षा कर सकें। इसलिए उसने सरदार से कहा, "साहब, आप यहीं ठहर जाइये। मैं देख आता हूँ कि वे दोनों कुटीर में हैं या नहीं!"

लुटेरों के सरदार ने मुस्कुराकर कहा "ओहो, बड़े ही चालाक हो। तुम्हारीं चालें मेरे पास नहीं चलेंगी। सिंधु के रेगिस्तान से निकलकर मैं इन पर्वतीय प्रांतो में आया हूँ। अपने इस सफर के दौरान मैं, तुम जैसे बहुत-से लोगों को देख चुका हूँ। तुम्हारी बातों पर विश्वास कर बैठनेवाला कोई मूर्ख नहीं हूँ मैं।"

दोनों मिलकर कुटीर के पास गये। बाँस की फट्टी से बना दरवाज़ा बंद था। लुटेरों का सरदार और उसका एक अनुचर दरवाज़ा खोलकर अंदर गये। वहाँ उन्होने देखा कि बाघ, रीछ जैसे जानवरों के चमड़े दीवारों पर लटक रहे हैं। उन्हें वहाँ एक कोने में रखे धनुष-बाण भी दिखायी पड़े।

सरदार ने अपने अनुचर को आज्ञा दी कि वह सारा सामानअपने साथ ले आये। बाहर आकर उसने स्वर्णाचारी को ऊँट पर बैठने का आदेश दिया।

स्वर्णाचारी जान गया कि उसकी जान ख़तरे में है। सरदार ने जबरदस्ती उसे ऊँट पर चढ़ा दिया। तब स्वर्णाचारी ज़ोर ज़ोर से "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ" कहकर चिल्लाने लगा।

विघ्नेश्वर पुजारी को यह चिल्लाहट सुनकर संदेह हुआ कि स्वर्णाचारी जैसा बुद्धिमान अपनी रक्षा के लिए चिल्ला पड़े ? अवश्य ही वह किसी भारी संकट में फंस गया होगा। मुझे जाकर अवश्य ही उसे बचाना होगा। यों सोचता हुआ वह क्षत्रिय युवकों के कुटीर की ओर बढ़ा। उसने वहाँ पहुँचने पर देखा कि स्वर्णाचारी ऊँट पर बैठा हुआ है और

लुटेरों का सरदार भाला दिखाते हुए उसे ड़रा-धमका रहा है।

विघ्नेश्वर पुजारी के दिमाग में बिजली की तरह एक उपाय कौंध उठा। कुटीर में बसे क्षत्रिय युवक सिंह को उसके बचपन में ही ले आये थे और प्यार से उसे पाल रहे थे। उन्होंने उसका नाम रखा परशुराम।

क्षत्रिय युवकों के साथ-साथ स्वर्णाचारी और विघ्नेश्वर पुजारी के साथ वह खूब हिल-मिल गया। जब क्षत्रिय युवक कुटीर में हों तो वह स्वच्छंदतापूर्वक इर्द-गिर्द निर्भय होकर घूमता रहता था। जब वे कुटीर में नहीं होते थे तब वे उसे कुटीर के पीछे के लकड़ियों से बने पिंजडे में बंद करके जाते थे।

अब विघ्नेश्वर पुजारी को लगा कि उस सिंह को छोड दूँ तो स्वर्णाचारी को बचा सकता हूँ और लुटेरों को भगा सकता हूँ। स्वर्णाचारी की चिल्लाहटें सिंह को क्रोधित करेंगी और वह लुटेरों पर झपट पड़ेगा। चूँकि वह हम दोनों से भी हिल-मिल गया है, अतः अवश्य ही स्वर्णाचारी की रक्षा के लिए कूद पड़ेगा। विघ्नेश्वर पुजारी दौड़ा गया और उसने पिंजडा खोल दिया। सिंह गुर्राता हुआ बाहर आया। बाहर आते ही उसने सिर उठाया और ऊँट को देखा। फिर वह गरजता हुआ विघ्नेश्वर पुजारी की ओर मुड़कर देखता रहा।

विघ्नेश्वर पुजारी ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाना चाहा। उसने थोड़ी भी देरी न करते हुए चुटकी बजाकर सिंह को उकसाया। जिससे वह लुटेरों पर हमला कर बैठे। स्वर्णाचारी ने यह दृश्य देख लिया और जान-बूझकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, "परशुराम...! परशुराम...!! मेरी रक्षा करो।"

सिंह ने स्वर्णाचारी को पहचान लिया। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और केसर को एक बार झुलाया। भयंकर रूप से गरजता हुआ ऊँटों की तरफ़ बड़ी ही तेज़ी से लपका। सिंह को देखते ही ऊँट घबराकर तितर-बितर हो गये। मुड़े बिना वे तेज़ी से भागने लगे। एक लुटेरा धड़ाम से नीचे गिरा। सिंह उस पर लपका और उसके गले को पकड़ लिया।

(सशेष)

आत्म प्रशंसा

एक दिन दोपहर को अनन्त अपनी पत्नी और बेटी मीनाक्षी के साथ भोजन करने ही जा रहा था कि दरवाजे पर से आवाज आयी,- "इस भूखे बैरागी की भूख मिटाकर पुण्य कमाओ बाबा।"

अनन्त बैरागियों के क्रोध से थोड़ा भय रखता था। किन्तु उनके प्रति श्रद्धा भी रखता था। वह तुरन्त बाहर आया और बैरागी को आदर के साथ अन्दर ले गया। उसने अपने साथ बैरागी को भी भोजन पर बैठा लिया।भोजन करते समय बैरागी ने अनन्त से कहा,-"अपने पूर्व जन्म में आप विदर्भ-नरेश अमर सिंह के मंत्री थे। राजा और प्रजा दोनों आपकी कुशाग्र बुद्धि की प्रशंसा करते थे।"

अनन्त, बैरागी की बातों से बहुत प्रसन्न हुआ इसलिए उसने अपनी बेटी मीनाक्षी को बैरागी के भोजन में और घी डालने के लिए कहा। फिर उसने बैरागी से अपनी बेटी के पूर्व जन्म पर प्रकाश डालने का अनुरोध किया।

बैरागी ने आँखे बन्द करके ध्यान करने का अभिनय किया, मानों वह उसके पूर्व जन्म से अवगत होने का प्रयास कर रहा हो। फिर वह अचानक बोल उठा -"अद्‌भुत! महा अद्‌भुत!! तुम्हारी बेटी पूर्व जन्म में राजा अमर सिंह की रानी थी।"

अमर सिंह ने अपनी बेटी से कहा,-"बैरागी बाबा के पत्तल में और घी डालो !" फिर उन्होंने पूछा- "बाबा, अब यह बताइये कि अमर सिंह इस जन्म में कहाँ होंगे और क्या कर रहे होंगे?"

बैरागी ने अनन्त और उसकी पत्नी को देखकर हँसते हुए कहा,-"इस जन्म में अमर सिंह मैं ही हूँ।"

यह सुनते ही अनन्त क्रोधित हो उठा और दीवार के पास रखी लाठी उठाकर बैरागी को मारने दौड़ा। बैरागी भोजन छोड़कर भाग खड़ा हुआ और यह बोलता हुआ तेजी से दौड़ने लगा कि "यह सत्य है कि घोर कलियुग में सच बोलोगे तो मार पड़ेगी।"
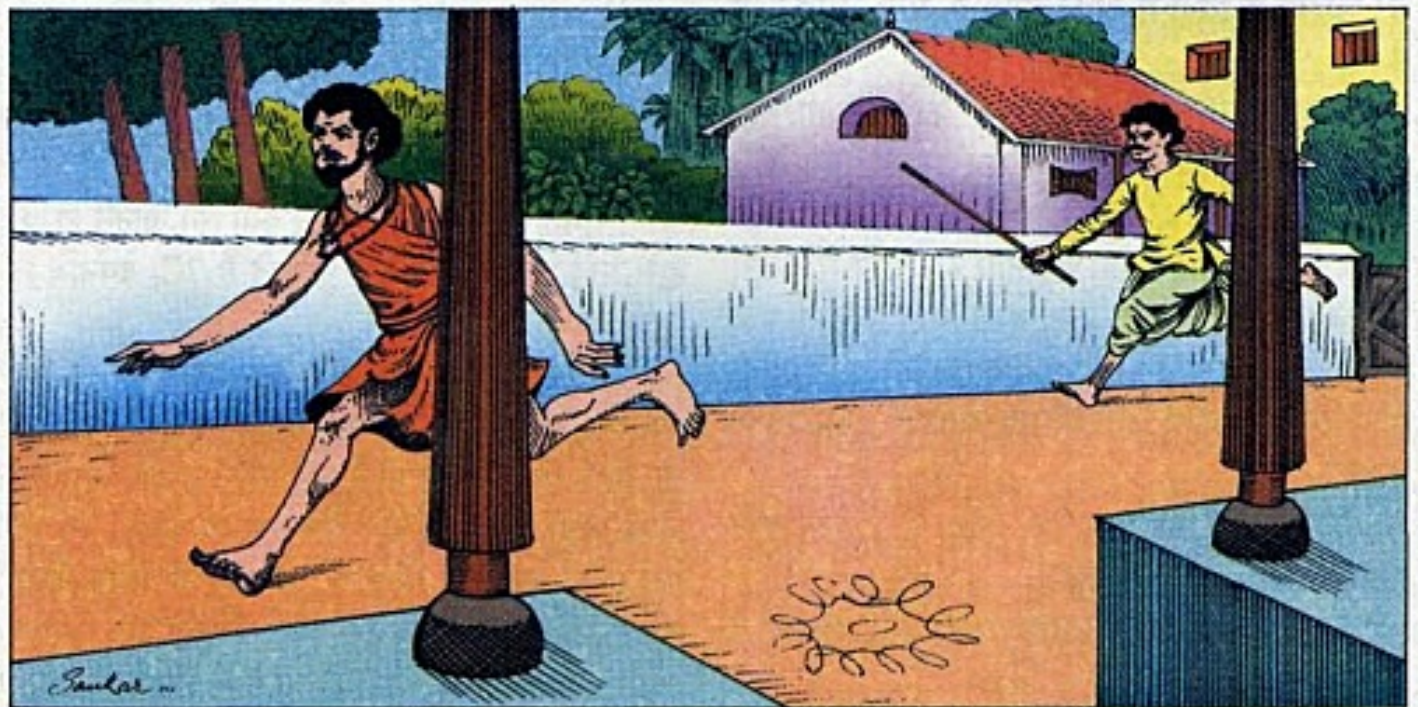
एक महान सभ्यता की झांकियाँ
युग-युग में सत्य के लिए इसकी गौरवमयी खोज

१२ ध्रुव चरित्र

वह दिसंबर का महीना था। प्रातः काल ठंड़ी हवा चल रही थी। देवनाथ कंबल ओढ़कर बाहर आये तो उन्होंने देखा कि संदीप और श्यामला एक और बालक को अपने साथ लेकर उन्हीं की तरफ़ चले आ रहे हैं। पास आने के बाद संदीप ने कहा, "दादाजी, हमारे साथ एक नया श्रोता आया है। यह शिमला में रहता है। छुट्टियों के दिनों में अपने मामा के यहाँ आया हुआ है।"

"तुमने तो अपने नये दोस्त का नाम ही नहीं बताया", देवनाथ ने पूछा। "ध्रुव इसका नाम है", संदीप ने बताया।

"बड़ा ही उत्तम नाम है। नाम सुनते ही मुझे बड़ा आनंद हुआ। किन्तु एक बात याद रखो। ऐसे नामधारियों को बड़ी ही जिम्मेदारी के साथ पेश आना होगा उनपर बड़ा ही उत्तरदायित्व होता है", देवनाथ ने कहा।

"जिम्मेदारी के साथ पेश आना है ? ऐसा क्यों दादाजी ?", संदीप ने पूछा।

"तुम ध्रुव की कहानी नहीं जानते ?", देवनाथ ने पूछा।

"ध्रुव का नाम तो सुना है, परंतु उनकी कहानी नहीं जानता", संदीप ने कहा।

श्यामला ने कहा, "मैं उनकी कहानी जानती हूँ, दादाजी !"

देवनाथ ने ध्रुव की तरफ़ मुड़कर उससे पूछा, "क्या तुम यह कहानी जानते हो ?"

"वह एक राजकुमार थे। सौतेली माँ ने उनका अपमान किया था, इस कारण वह जंगल में चले गये। वहाँ उन्होंने तपस्या की और ध्रुव नक्षत्र बन गये", ध्रुव ने कहा।

"तुमने ठीक ही कहा। परंतु क्या तुम जानते हो कि हम उनकी कहानी से क्या सीखते हैं ?", देवनाथ ने पूछा।

तीनों ने एक-दूसरे को उत्सुकता-भरी दृष्टि से देखा। श्यामला ने अपने भाई की ओर देखते हुए कहा, "समझ लो हमारी एक सौतेली माँ है और उसने तुम्हारा अपमान किया। तुम जंगल जाओगे और तपस्या करोगे। तुम भी नक्षत्र बन जाओगे। परंतु हाँ, आकाश में चमकनेवाले नक्षत्र नहीं बनोगे बल्कि मुंबई भाग जाओगे और सिनेमा नक्षत्र बन जाओगे", उसकी बातों में शरारत भरी हुई

गाथा
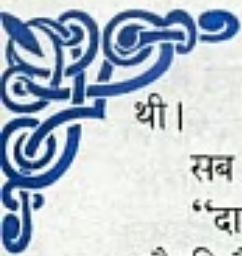
थी।

सब खिलखिलाकर हंस पड़े।

"दादाजी ! आप मानते हैं न कि हंसी गुणकारी औषधि है। मैंने यह औषधि आपको दी। पर मैं बिना शुल्क वसूल किये, दवा देनेवाली डाक्टरों में से नहीं हूँ। मुझे भी शुल्क देना ही पड़ेगा। ध्रुव की कहानी आपको हमें बतानी होगी और यही मेरा शुल्क होगा।", श्यामला ने कहा।

"यह कहानी तो सब जानते हैं। तुमने भी कहा था कि मैं भी जानती हूँ", देवनाथ ने कहा।

"कथा तो लगभग जानती हूँ। किन्तु उस कथा में निहित अर्थ को और उससे बोधित परमार्थ को हममें से कोई नहीं जानते !", श्यामला ने कहा।

"ठीक है, मैं अभी वह कथा सुनाऊँगा। ध्यान से सुनना।", देवनाथ कुर्सी में बैठ गये और कहानी सुनाने लगे।

"उत्तानपाद नामक राजा की सुनीति, सुरुचि नामक दो पत्नियाँ थीं। सुनीति गुणवती, सुशील व विनम्र संपन्न थी। जबकि सुरुचि की नस-नस में अहंकार भरा हुआ था। राजा किसी भी स्थिति में उसकी बात को टालते नहीं थे। उसका कहा ही वे मानते थे।

एक दिन राजा सुरुचि से बातें करने में मग्न थे। तब पाँच-छः साल की आयु के दो बालक ध्रुव और उत्तम वहीं खेल रहे थे। ध्रुव सुनीति का पुत्र था और उत्तम सुरुचि का। थोड़ी देर बाद उत्तम सीधे जाकर अपने पिता की जाँघ पर बैठ गया। ध्रुव भी उसके पीछे-पीछे गया और अपने पिता की दूसरी जाँघ पर बैठने का प्रयत्न किया। किन्तु राजा के बगल में ही बैठी सुरुचि ने ऊँचे स्वर में कहा "ठहर...!"। फिर उसने ध्रुव से कहा, "केवल मेरे पुत्र को ही अपने पिता की जाँघ पर बैठने का अधिकार है। इसकी आशा करना तुम्हारी मूर्खता ही होगी। तुममें अपने पिता की जाँघ पर बैठने का इतना ही शौक है, तो तुम्हें मेरी कोख से

जन्म लेना था। किसी और की कोख में जन्म लेने के कारण तुम इस सौभाग्य से वंचित हो।"

सुरुचि के मुँह से निकली कठोर बातें ध्रुव के हृदय में सुइयों की तरह चुभ गयीं। उसने अपने पिता और सौतेली माँ को एक बार ग़ौर से देखा, और वहाँ से चल पड़ा। बाहर आकर वह रो पड़ा। अपनी दयनीय स्थिति पर उसे बड़ा क्षोभ हुआ। वह सीधे अपनी माँ के पास गया। माँ ने उसे बड़े प्यार से अपनी गोद में लिया और रोने का कारण जानना चाहा। ध्रुव ने सौतेली माँ के दुर्व्यवहार का पूरा विवरण दिया। वह रोता जा रहा था और कहता भी रहा कि सौतेली माँ ने कितनी निर्दयता के साथ उसका अपमान किया।

सुनीति की आँखों में भी आँसू छलक आये। फिर उसने अपने पुत्र को समझाने के उद्देश्य से कहा "पुत्र, मनुष्य को केवल पिता या राजा मात्र का ही आदर पर्याप्त नहीं होता। उसे चाहिये सभी लोकों की माँ और पिता, भगवान का आदर एवं आशीर्वाद। भगवान की गोद ही एकमात्र शाश्वत सुरक्षित स्थल है। जब एक बार तुम वहाँ पहुँच जाओगे, तब तुम्हारा निरादर करने का कोई साहस ही नहीं करेगा। ऐसे दुःसाहस करनेवाले

का घोर अपमान होगा। उस महोन्नत स्थान से तुम्हें कोई भी गिरा नहीं सकेगा। वही एकमात्र स्थल है, जो शाश्वत, सुरक्षित व अतिउत्तम है। भगवान की करुणा और प्रेम के सामने सब कुछ नगण्य है। अगर तुम उन्हें पा सकोगे, तो तुम्हारा अपमान कोई भी कर नहीं सकता।

ध्रुव ने माँ की बातें बड़े ही ध्यान से सुनी। अपने आँसुओं को पोंछते हुए थोड़ी देर तक वह चुप रहा। फिर खड़े होकर उसने कहा, "माते, मैं भगवान के प्रेम का पात्र बनना चाहता हूँ। तपस्या करने अभी, इसी क्षण जंगल जा रहा हूँ। मुझे आशीर्वाद दीजिए।"

माता सुरुचि ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की कि यह तपस्या करने योग्य आयु नहीं है। किन्तु ध्रुव टस से मस न हुआ। वह अपने निर्णय पर दृढ़ रहा। अंत में विवश होकर उसने ध्रुव को विजयोस्तु कहकर आशीर्वाद दिया।

अचंचल विश्वास के साथ ध्रुव जंगल में गया। एकाग्रचित्त होकर वह तपस्या करने लगा। वन में विचरते हुए क्रूर मृगों को देखकर वह भयभीत नहीं हुआ। गर्मी, ठंड, बिजली, वर्षा उसका कुछ बिगाड़ न सके। उसकी एकाग्रचित्तता में कोई भी बाधा नहीं डाल सके। उसके आग्रह में कोई ढिलाई या शिथिलता नहीं ले आ सके। अंत में उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर स्वयं विष्णु प्रत्यक्ष हुए। उन्होंने उसे वरदान दिया कि संपूर्ण जीवन बिताने के बाद ध्रुव नक्षत्र बनकर वह आकाश में शाश्वत रूप से प्रकाशित होता रहेगा।"

आज भी हम उत्तरी दिशा में ध्रुव नक्षत्र को देख सकते हैं। एक महान भक्त इस दिव्य सृष्टि में शाश्वत रूप से एक अंश बन गया। एक दिन जिस स्थान पर पहुँचने की उसकी आशा बनी, वह पूरी नहीं हो पायी। उसकी सौतेली माँ ने वहाँ तक पहुँचने से उसे रोका। परंतु आज वह ऐसे ऊँचे व उन्नत स्थल पर पहुँच गया है, जहाँ से उसे कोई भी उतार नहीं सकता। संसार का मार्गदर्शक नक्षत्र बनकर वह आकाश में जगमगा रहा है", देवनाथ ने यों समाप्त किया।

"उस स्थान पर बैठकर हम अगर अपने संसार की ओर दृष्टि पसारें तो यह जग बड़ा ही विचित्र लगेगा न दादाजी। मनुष्यों के सुख-दुःख, मद-मोह आदि कुछ भिन्न ही लगेंगे न दादाजी !" श्यामला ने हँसते हुए पूछा।

"मैं तो यह नहीं जानता कि वहाँ से संसार कैसा दिखेगा। परंतु क्या तुम यह जानते हो कि वरों की प्राप्ति के बाद ध्रुव का क्या हुआ ?", देवनाथ ने पूछा।

"और क्या होगा ? ध्रुव नक्षत्र हो गए", ध्रुव ने कहा। "नहीं ! विष्णु के आदेश के अनुसार वह स्वदेश पहुँचा। कुछ समय बाद वह राजा बना। सिंहासन पर आसीन हुआ। वृद्धावस्था में उत्तानपाद ने गृहस्थाश्रम छोड़ दिया और वानप्रस्थाश्रम को स्वीकार करके अरण्य चला गया। यक्षों ने उसके भाई उत्तम को मार डाला था। अकेले ही जाकर ध्रुव ने उन सबको हराया। उनके राजा कुबेर ने उससे सुलहकर ली और उसे कितने ही वर दिये। बता सकते हो, ये सारी घटनाएँ क्या सूचित कर रही हैं ?" देवनाथ ने प्रश्न किया।

बच्चे कुछ नहीं कह पाये तो देवनाथ ने कहा, "भगवान के दर्शन प्राप्त करने के बाद भी, उनसे वरों को पाने के बाद भी मनुष्य को चाहिए कि वह अपने कर्तव्य

को सुव्यवस्थित रूप से निभाये। उन्हें भूलकर उदासीन रहना अकर्मण्यता है। हाँ, मानता हूँ कि मनुष्य दर्प में चूर होकर अपनी सीमाओं को पार करता है और नीच काम करने लगता है। वहीं से उसका पतन शुरु होता है। किन्तु ज्ञानी को अहंकार छू नहीं पाता, वह अपनी सीमाओं को नहीं लांघता, वह कर्तव्य-पालन निष्ठापूर्वक करता है और अपने जीवन को सार्थक बनाता है। ऐसा मनुष्य संसार में भगवान का साधन है, जिसके द्वारा आदर्श स्थापित किया जाता है।"

ध्रुव भी एक ऐसा ही आदर्श मनुष्य है। भगवान के दर्शन-भाग्य के बाद भी उसने राजा बनकर अपने कर्तव्य निभाये। वह सदा सुपथ पर ही चलता रहा। परंतु ध्रुव की यह कहानी बताती है कि भगवान की करुणा का पात्र बनकर, दिव्य-शक्ति को ग्रहण करना ही जीवन का परमार्थ है। उत्तानपाद ने जिस प्रकार ध्रुव की आज्ञा को भंग किया, उसी प्रकार बहुत से ऐसे लोग भी होंगे, जो दूसरों की आशाओं को भंग करने में काफी अभिरुचि रखते हैं। मनुष्य की यह प्रवृत्ति पाशविक है और यह सर्वथा निंदनीय भी। यह सच है कि भगवान उसे कभी निराश नहीं करते, जो उसपर अटूट विश्वास रखते हैं।" देवनाथ ने यों विवरण दिया।

"दादाजी, क्या सचमुच ही ध्रुव मरने के बाद नक्षत्र बन गये ?", संदीप ने पूछा।

"मैं तो समझता हूँ कि यह एक प्रतीक मात्र है। औन्नतम व सुस्थिरता का चिन्ह है, ध्रुव नक्षत्र। अल्प विषयों की ओर आकर्षित होकर द्वेष, ईर्ष्या, घृणा आदि तामसिक गुणों के वश में आ जाने से मनुष्य का व समस्त संसार का सर्वनाश होता है। उत्तम व दिव्य मार्ग है- सर्वोन्नत दिव्य शक्ति की ओर हम अपना ध्यान व दृष्टि केंद्रित करें और गुणवान बनें। ध्रुव नक्षत्र भी हमें यही संदेश देता है।" देवनाथ ने कहा।

"बहुत-बहुत धन्यवाद दादाजी! आपने इस कहानी का अंतरार्थ बताकर हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।", ध्रुव ने कहा।

ध्रुव की कहानी बड़ी ही प्राचीन है। भगवान से मनुष्य के जो संबंध हैं, वे ही सत्य हैं, शाश्वत हैं। शेष जितने भी संबंध हैं, उनमें परिवर्तन होते रहते हैं। यही सत्य ध्रुव की कहानी भी घोषित करती है। भारत के तत्व चिंतन का विश्वास है कि भगवान सर्वव्यापी हैं। एक और राजकुमार की कहानी भी इसी सत्य का ध्रुवीकरण करती है। क्या तुम समझ गये कि मेरा संकेत किसकी ओर है ? क्या बता सकते हो ?", देवनाथ ने पूछा।

"आपका संकेत प्रह्लाद की ही ओर है न ?", संदीप ने कहा।

"हाँ, प्रह्लाद ने साबित कर दिया कि भगवान सब स्थलों में हैं। वे निर्जीव स्तंभ में भी हैं। राक्षस राजा हिरण्यकश्यप ने इस सत्य का तिरस्कार किया। इस सत्य को प्रमाणित करने हेतु भगवान ने नरसिंह का अवतार लिया और हिंसाशक मार्ग पर ही चलकर उन्होंने यह प्रमाणित किया।", देवनाथ ने कहा।

(क्रमशः)

नम्रता

कौसर अपने गाँव के धनिकों में से एक था। उसे एक माली की सेवा की आवश्यकता थी। अपने मित्र शिव से उसने यह बात बतायी। उसने गंगू और मंगू नामक दो आदमियों को भेजा और यह भी कहला भेजा कि उनमें से किसी एक को वह चुने और नौकरी पर लगायें।

कौसर सबेरे ही उन दोनों को बगीचे में ले गया और उनसे कहा, "शाम तक काम करो। फिर मैं निर्णय करूँगा कि तुम दोनों में से किसे काम पर लिया जाय।", यों कहकर वह वहाँ से चला गया।

दोपहर का समय था। कड़ी धूप थी। उस समय कौसर बगीचे में आया। यजमान को देखते ही गंगू दौड़ा और उनके बैठने के लिए एक कुर्सी ले आया। पानी भी पिलाया और पाँव भी दबाने लगा।

कौसर ने गंगू से कहा, "देखा, मंगू अपने काम में लगा हुआ है। उसे इसकी खबर भी नहीं कि मैं यहाँ इस कड़ी धूप में आया हूँ। लगता है, वह बहुत घमंडी है। ऐसे को तो काम पर रखना नहीं चाहिए। उसमें नम्रता नाम मात्र के लिए भी नहीं है।"

फिर कौसर ने मंगू को अपने पास बुलाया और उससे कहा, "देखते नहीं, मैं इस कड़ी धूप में यहाँ आया हूँ और यहाँ बहुत देर से बैठा हूँ। तुम तो अपने काम में इतने मशगूल हो कि तुमने मेरी तरफ़ देखा ही नहीं। मालिक के साथ क्या ऐसा ही बरताव किया जाता है ?"

मंगू ने हाथ मलते हुए कहा, "क्षमा कीजिए मालिक। काम में लगा हुआ था। इसलिए आपका आना भी मैंने नहीं देखा।"

कौसर ने उन दोनों को कुछ और काम सौंपे और वहाँ से चला गया। दूसरे दिन उसने उन दोनों को बुलवाया और अपना निर्णय सुनाते हुए कहा, "मंगू माली का काम करेगा।" तब गंगू ने दीन स्वर में कहा, "साहब...! कल जब आप आये थे, तब मैंने आपकी सेवा की। लेकिन माली की नौकरी मुझे न देकर आपने मंगू को दी। आप ही कह रहे थे कि वह घमंडी है, मालिक का आदर करना भी नहीं जानता, उसे मेरी परवाह ही नहीं। ऐसे आदमी को आपने नौकरी दी, क्या यह आपको ठीक लगता है ? क्या आप मेरे साथ अन्याय नहीं कर रहे हैं?"

कौसर ने उसे गौर से देखते हुए कहा, "तुम ठीक तरह से काम नहीं करते हो। काम से बचने की तुम्हारी प्रवृत्ति है। तुम कामचोर हो। मंगू ने मेरा आदर नहीं किया तो क्या हुआ ? वह अपने काम का आदर करना जानता है। काम करते रहने में उसे आनंद मिलता है। वही सच्चा मनुष्य है, जो अपने काम को श्रद्धापूर्वक करता है। मेरी दृष्टि में अपने मालिक के प्रति दिखायी जानेवाली सच्ची नम्रता वही है। अब तुम्हें मालूम हो गया होगा कि मैंने इस काम के लिए मंगू को ही क्यों चुना ?"

बीसवीं शताब्दी में भारत

स्वतंत्रता की ओर अग्रसर-१९०१-१९२१

अभी अधिक समय नहीं हुआ जबकि इस पत्रिका ने भारत के स्वतंत्रता की स्वर्ण-जयन्ती पर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और अन्य लोगों की रोमांचकारी कहानियों को आपके समक्ष प्रस्तुत किया। १८५७ की गाथा ने आपको बताया कि किस प्रकार उन्होंने मातृभूमि के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इसके बाद आगामी एक चौथाई शताब्दी में कोई योजनाबद्ध गतिविधि नहीं रही, जिससे कि लोगों को संगठित होने के लिए उत्साहित किया जा सका हो।

परिस्थितियों में एक आश्चर्यजनक मोड़ ए .ओ . ह्यूम के रूप में आया। ब्रिटिश सरकार के इस भूतपूर्व अधिकारी ने एक ऐसे संगठन का बीज बोया, जहाँ बैठकर लोग बातचीत कर सकें और अपने भविष्य का निर्णय ले सकें। इस प्रकार १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। उस समय बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय और बिपिन चन्द्रपाल जैसे नेताओं ने भारतीय सोच को एक नयी दिशा दी।

भारतीय राष्ट्रीयता का प्रसार

बीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ भारत में आकाल द्वारा हुआ। एक चौथाई जनसंख्या पर इसका प्रभाव पड़ा। कृषि के क्षेत्रों में पानी और सिंचाई की व्यवस्था करने हेतु एक आयोग की स्थापना की गई। कृषि बैंक की स्थापना के लिए एक समिति भी स्थापित की गई।

भारतीयों के लिए तत्कालीन प्रशासन ने रुदन के सिवा और कुछ नहीं दिया। इसलिए भारतीय राज्यों के शासक सामाजिक सुधार की ओर बढ़े। बरोदा के गायकवाड ने बाल विवाह निषेध कानून आरम्भ किया जिसमें लड़की के लिए १२ वर्ष तथा लड़के के लिए १६ वर्ष आयु आवश्यक बताई गई।

पारसी, जो ८ वीं शताब्दी में ही पारसिया छोड़कर भारत में आ गए और इसी को अपना घर मान लिया, उनमें से कई लोग बड़े ही राष्ट्रभक्त निकले। जिनमें जमशेदजी टाटा का नाम सर्वोपरि है। उनका सपना

टाटा

औद्योगिक भारत की स्थापना था।
१९०१ में बिहार में प्रथम स्टील मिल स
की। छः वर्ष बाद बकायदा इसे टाटा
एण्ड स्टील मिल के नाम से जाना जा
और उस स्थान का नाम जमशेदपुर पड़

इसी प्रकार एक दूसरी पारसी
भिकाजी का
भारतीय र
कांग्रेस के
बैठक में
लिया
थीं,
.१९

कामा

विश्व भ्रमण पर गयीं। इस प्रकार
भारतीय राष्ट्रीयता का प्रसार किया। अपने
के दौरान वे स्टटगार्ट, जर्मनी भी गई,
उन्होंने द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में
फहराया, जो बाद में भारत का राष्ट्रीय
बना।

उन लोगों में लेनिन ने भी झण
सलामी दी, जो रशियन क्रांति के नेत
मैडम कामा को भारतीय क्रांति की
कहा गया।

इंग्लैण्ड में एडवर्ड-सप्तम ने १९

राजसिंहासन का दायित्व सम्भाला। उसके बाद वे पहली बार भारत आए, जहाँ उन्हें १९०३ में भारत के बादशाह का ताज पहनाया गया।

उन्होंने आकाल प्रभावित इलाकों में लागान पर छूट देने की घोषणा की। उसी समय साम्राज़्यवादी कृषि शोध संस्थान पूसा बिहार में स्थापित हुआ, जो अब दिल्ली में स्थापित है।

- रविन्द्रनाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन की स्थापना बोलपुर में की जो कलकत्ता से १३० कि.मी. की दूरी पर है।

- भारतीय वनस्पति शास्त्री जगदीशचन्द्र बोस ने पहली बार रॉयल सोसॉ-इटी लंदन में अपने भाषण में यह बताया कि पेड़ पौधों में भी जीवन होता है और वे महसूस कर सकते हैं एवं उनमें भी भावनात्म संवेदना होती है।

जगदीशचन्द्र बोस

विश्व में और कहाँ........
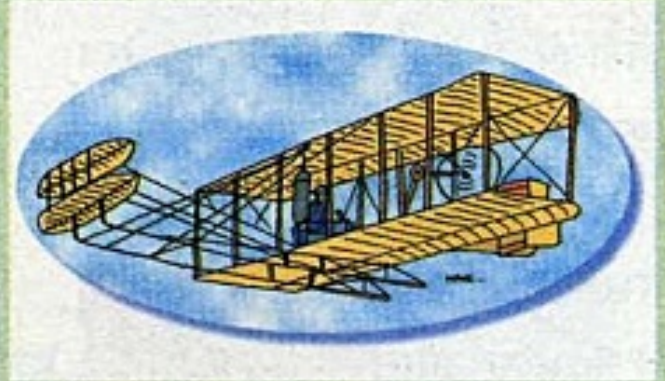
- रॉइट ब्रदर्स ने आसमान को अपने किट्टी-हॉक में ले लिया। उन्होंने उत्तरी कारोलिना, अमेरिका में हवाई जहाज का निर्माण किया।

- एक किसान के बेटे हेनरी फोर्ड ने अमेरिका के डेटरॉइटी में प्रथम कार बनाने की फैक्टरी स्थापित की। जो उस देश की औद्योगिक क्रांति का चिन्ह है।

ब्रिटिश-विरोधी दृढ़ भावना

पहला औद्यौगिक प्रदर्शन सर्वप्रथम १९०२ में अहमदाबाद में तथा उसके बाद १९०३ में महाराष्ट्र में कांग्रेस के वार्षिक सत्र का चिन्ह बन गया।

भारतीय सरकारी एक्ट १९०४ में अमल में लाया गया, जिसका उद्देश्य लोगों को कृषि, उधोग और बैंकिंग के लिए सरकारी समितियाँ बनाने के लिए उत्साहित करना था।

ट्रैवन्कोर पहला भारतीय राज्य बना जिसने सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क देने की बात सोची।

१९०५ में एक दुःखद घटना घटी, बंगाल का बँटवारा पूर्वी बंगाल (जिसमें ढाका असम की राजधानी) और पश्चिमी बंगाल में हुआ। (बिहार और ओड़िसा के भाग कलकत्ता राजधानी), सरकार ने इसकी सफाई में कहा कि यह मात्र प्रशासनिक कार्यो की सुविधा के लिये किया गया है, परन्तु लोगों ने उसे राजधानी कलकत्ता से सशक्त मुस्लिम जनसंख्या को दूर रखने के लिए किया गया समझा।

स्वाभाविक था कि उस समय ब्रिटिश सरकार की विरोधी नीतियाँ चल रही थीं। चारों ओर विदेशी सामानों के विरोध में हड़ताल कर उनका बहिष्कार किया जा रहा था। बंगाल उस समय स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व कर रहा था।

सरकार ने कृषि को बढ़ावा देते हुए पूना, नागपुर, कानपुर तथा कोयम्बटूर में कृषि महाविद्यालयों की स्थापना की।

वन्देमातरम गीत कांग्रेस के २२वें

अधिवेशन, १९०६ में कलकत्ता में गाया गया। दादाभाई नौरोजी उस समय अध्यक्ष थे। मुहम्मद अली जिन्ना ने सदस्य की भाँति उसमें भाग लिया।

अरविन्दो घोष

अरबिन्दो घोष ने एक वन्दे-मातरम नामक समाचार पत्र आरम्भ किया। जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन के विरोध में संघर्ष था।

- भारत की पहली सर्कस कम्पनी मलाबार ग्रैन्ट सर्कस कीलेरी कुन्नीकन्नन द्वारा स्थापित की गई।
- मानेक़ डी. सेदना ने पहला चलता-फिरता सिनेमा स्थापित किया जिसमें जीसस क्राईस्ट का जीवन चित्र प्रस्तुत था।

विश्व में और कहाँ........
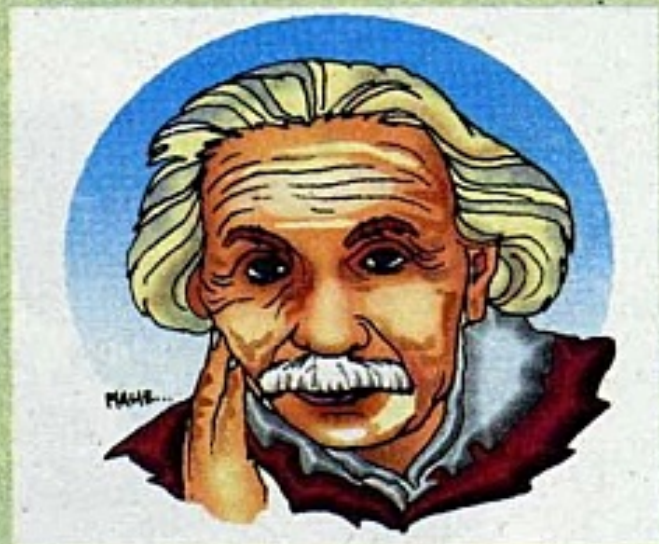
- आईन्सटाईन का रिलेटीविटी का सिद्धान्त घोषित हुआ।
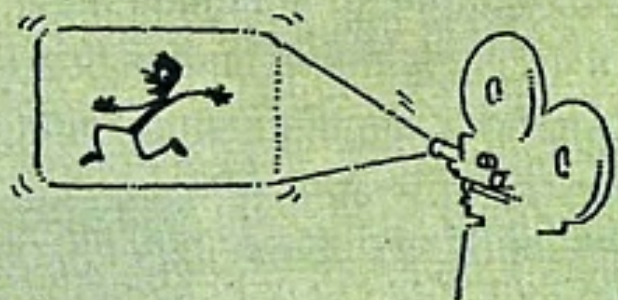
- जॉन स्टूअर्ट ब्लैकटोन द्वारा प्रथम कार्टून एनीमेटेड फिल्म बनाई गई।

नरम दल–गरम दल

१९०७ में सूरत अधिवेशन के दौरान कांग्रेस दो भागों में विभाजित हो गई। क्योंकि कुछ गरमदल

के नेताओं ने विदेशी शासकों को देश से पूर्णत: बाहर निकालने की बात की और नरमदल वाले चाहते थे कि शासन ब्रिटिश सरकार का ही रहे, परन्तु भारतीयों को भी समान अधिकार मिलना चाहिए। नरमदलियों ने अरबिन्दो घोष के नेतृत्व में वहीं पर एक बैठक का आयोजन किया। तिलक तथा विपिन चन्द्र पाल ने इसका समर्थन किया। नरमदलियों ने अलग से एक बैठक की, जिसमें गोखले, रासबिहारी बोस तथा सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने भाग लिया। नरमदल के नेता १९१६ में पुन: कांग्रेस मे मिल गए।

सरकार ने १९०८ के अलीपुर बम विस्फोट के मामले में बहुत सारे गरमदलीय नेताओं को दोषी ठहराया। अरबिन्दो घोष को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। यह उनके जीवन का एक नया मोड़ था। उन्होनें घोषणा की कि कर्म लड़ाई-झगड़े से कहीं अच्छा है, जिसमें जीतने के लिए आध्यात्मिक आधार का होना आवश्यक है। जेल से बाहर आने के बाद उन्होने राजनीति छोड़ दी।

तिलक की गिरफ्तारी का विरोध करते हुए बम्बई में पहली बार मजदूरों ने ६ दिनों तक कार्य नहीं किया। इस मजदूर हड़ताल में लगभग एक लाख मजदूरों ने हिस्सा लिया और पुलिस तथा मिलट्री के साथ मोर्चा भी सम्भाला।

बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहे प्रशासन सुधारकों ने१९०९ में भारत सुधार एक्ट को प्रस्तावित करने की घोषणा की। एक मील का पत्थर अवश्य मिल गया था परन्तु कुछ राष्ट्रीय नेताओं को संतोष नहीं हुआ। यह निर्णय लिया गया कि केन्द्रीय सरकार और अन्य स्थानों में भारतीयों को भी शामिल किया जाएगा। सर सत्येन्द्र प्रसन्ना सिन्हा प्रथम भारतीय वायसराय के कार्यकारी समिति के सदस्य बने। राजा किशोरीलाल गोस्वामी पश्चिमी बंगाल मे राज्य कार्यकारी परिषद के भारतीय सदस्य बने।

तूतीकोरिन के वी. ओ. चिदाम्बरम पिल्लई दक्षिण भारतीय प्रथम स्वदेशी जहाज कम्पनी के संथापक बने। १० रुपए के हिसाब से उन्होंने शेयर बेचे और उससे जो पैसा आया उससे उन्होने दो जहाजें खरीदीं जो समुद्र में चलाई गई। यही भारत में जहाज उद्योग के आरम्भ का चिन्ह बना।

V.O.C.

विश्व में और कहाँ........

- लड़कों के लिए स्काउट संस्था लार्ड बेडेन पावेल द्वारा आरम्भ की गई।

- लंदन में २ लाख महिलाओं ने मतदान का अधिकार मांगते हुए एक जूलूस निकाला।

हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए बुलावा

अलीपुर बम कांड में जो १० लोग गिरफ्तार हुए थे उन्हें पहली बार देश से निर्वासित कर आजीवन कैदी के रूप में अण्डमान की सेल्यूलर

जेल में डाल दिया गया। जब १९३८ में यह जेल बंद कर दी गई तो वहाँ से ५०० सजा प्राप्त कैदी पाए गए।

मदनलाल ढींगरा जो ईंगलैण्ड में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, वे एक अंग्रेज अधिकारी की हत्या करने पर उतारू हो गए। भारतीय राष्ट्रीय संगठन ने ढींगरा के इस कार्य का विरोध किया। इस मत के खिलाफ एक अकेली ध्वनि वी. डी. सावरकर की उठी।

१९१० में अलाहाबाद में आयोजित कांग्रेस का सत्र पुनः एक अंग्रेज व्यक्ति सर विलियम वेडेर वैरोन की अध्यक्षता में हुआ। इस दल में विदेश में शिक्षा प्राप्त भारतीय सदस्य थे, न कि अंग्रेज। परन्तु अंग्रेज व्यक्ति को अध्यक्ष बनाने के पीछे दल का उद्देश्य नरम-गरम दल, हिन्दू-मुस्लिम और सदस्यों के बीच उत्पन्न मतभेद को समाप्त करना था। कांग्रेस के इस अधिवेशन से सरकार द्वारा मापे गए भारतीयों के कल्याण के प्रति संतोष प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त बंगाल के विभाजन के एक्ट को रदद करने की मांग की गई।

बंगाल के विभाजन के एक्ट को रद्द करने की माँग को सरकार ने स्वीकार कर लिया। १९११ में किंग जॉर्ज वी. के स्वागत के समय इसकी घोषणा दिल्ली दरबार में की गई। उन्होंने देश की राजधानी के कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरण की भी घोषणा की।

१९१२ में दो बंगाल एक साथ मिलकर, एक राज्य के रूप में १९४७ तक रहे जब पूर्वी बंगाल,
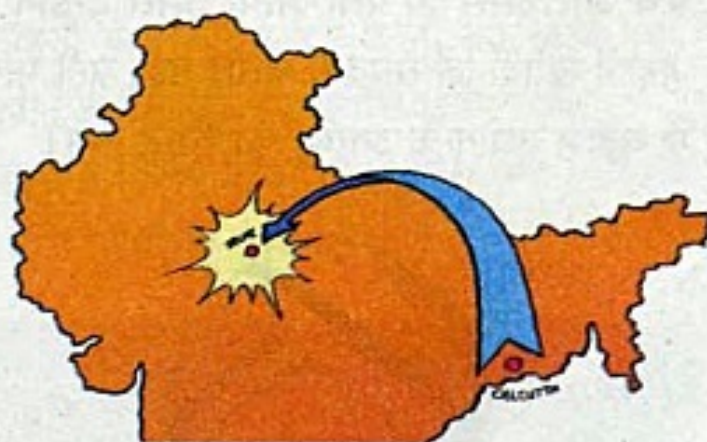
पाकिस्तान का हिस्सा हो गया और उसे पूर्वी पाकिस्तान कहा जाने लगा। जो १९७२ में अलग देश बंगलादेश बन गया।

भारत की राजधानी दिल्ली में स्थानांतरित कर दी गई। एक जुड़वा शहर बनाने की योजना

बनी। (दिल्ली - नई और पुरानी) रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा जनगण-मन लिखा गया और उन्हीं द्वारा पहली बार ब्रह्म समाज द्वारा आयोजित मगध उत्सव में गाया गया। (यही गीत भारत का राष्ट्रीय गान बना)।

टैगोर

कम्पनियों के सफल तेल की खानों की खोज उस देश में करने की घोषणा की गई। इससे भारतीयों के लिए परशिया में रोजगार का द्वारा खुल गया।(जो अब ईरान कहा जाता है)
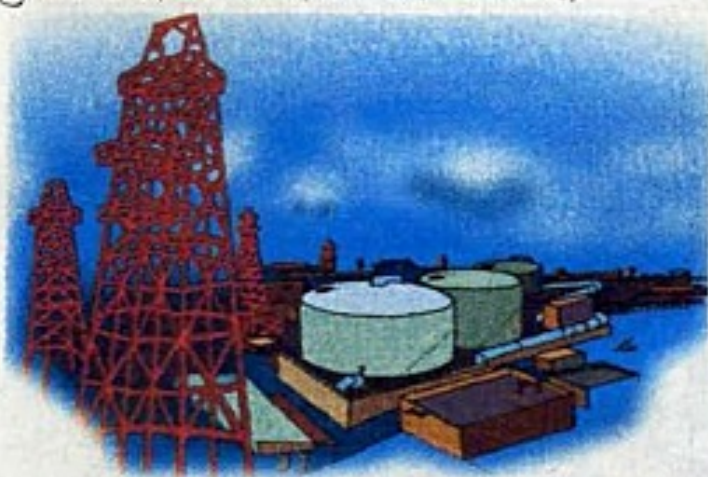
- लोगों का सम्मान अचानक और बढ़ गया जब १९१३ में साहित्य के लिए उनकी गीतांजली नामक कविता संग्रह को नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया।

विश्व में और कहाँ........

- प्लास्टिक युग की शुरुआत का चिन्ह अप्राकृतिक प्लास्टिक बनाने से आरम्भ हुआ। इसे यूँ भी कहा जाता है कि बैकलाइट की खोज बेल्जियम के लीओ बैकलिट ने की। यह उत्पाद भी पेरेक्स, सेलोफेन, सेफ्टी ग्लॉस, पॉलिस्ट, टेफलॉन तथा नायलान में परिवर्तित हो गया।
- लॉर्ड बैडेन पॉवेल की बहन एन्जेस ने बालिका संरक्षण (गर्ल गाईड मूवमेन्ट) आरम्भ किया।
- एस.एस. टाईटनिक नामक जहाज जो बहता हुआ महल के नाम से जानी जाती थी, १४ अप्रैल को इंग्लैण्ड के साउथाप्टोन से न्यूयार्क जाते हुए, तब समुद्र में डूब गई,

जब वह एक बर्फ की चट्टान से जा टकराई। २,२२४ यात्री और चालक दल के १,५१३ व्यक्ति सभी डूब गए।

सैनिक प्रतिरोध का समर्थन

लाला हरदयाल द्वारा अमेरिका में संचालित गदर पार्टी के पंजाबी कार्यकर्त्ताओं से पंजाब के किसान और फैक्टरी मजदूर काफी प्रभावित हुए। पार्टी का मानना था कि सैनिक बल ही एक मात्र साधन है, जिससे स्वतंत्रता को सुरक्षित रखा जा सकता है।

सेना में पंजाबी सैनिकों और अंग्रेजी अधिकारियों के बीच हमेशा ठनी रहती थी।

कोमागाथा मारू घटना ने पंजाबी लोगों में ब्रिटिश विरोधी भावना पैदा कर दी। लगभग ६०० सिख १९१४ में एक जहाज द्वारा कनाडा गए, जहाँ उन्हें उतरने नहीं दिया गया। वापस राजधानी आने पर सरकार ने कलकत्ता में कोई समस्या न खड़ी हो, इसलिए उन्हें पंजाब जाने के लिए कहा। इससे वहाँ पर गोली बारी शुरु हो गई और काफी लोग मारे गये और दूसरे लोग कैद कर लिए गए।

इस महान युद्ध के आरम्भ में बहुत सारे भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश सेना के साथ पश्चिमी सीमा पर युद्ध में भाग लिया। जर्मनी की पनडुब्बी एमडेन ने मद्रास हार्बर पर एक बम गिराया।

विश्व में और कहाँ........

- गाँधीजी को भारतीयों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के आदेश के खिलाफ आवाज उठाने के लिए पहली बार दक्षिणी अमेरिका में गिरफ्तार किया गया। इससे पूर्व उन्होंने २,५०० भारतीयों का नटल से ट्रान्सवॉल तक नेतृत्व किया। वे सभी गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें पुनः नटल भेज दिया गया। गाँधीजी को ९ महीने का कारावास हो गया।

- टार्जन कामिक्स में १९१४ में आना आरम्भ हो गया।
- २७ जुलाई १९१४ में पता चला कि प्रथम विश्व युद्ध किसे कहते हैं। उस समय आस्ट्रेलिया के राजकुमार आर्चड्युके फेर्डिनान्ड तथा उनकी पत्नी की २८ जुलाई को सारजेवों में हत्या कर दी गई। आस्ट्रिया ने सेर्बिया से कहा कि सभी आस्ट्रिया-हंगरी विरोधी गतिविधियों पर रोक लगा दी जाए। सेर्बिया ने २३ जुलाई को आस्ट्रिया का प्रस्ताव रद्द कर दिया। आस्ट्रिया ने २५ को सेर्बिया के साथ युद्ध की घोषणा कर दी। रशिया, ब्रिटेन, फ्रांस और उनके मित्र देशों ने एक दल तैयार किया जिसे अलाईन (सहयोगी) कहा जाता था। इसके अतिरिक्त आस्ट्रेलिया ने हंगरी, जर्मनी, रोमानिया, पोर्तगाल, बेल्जियम, नीदरलैण्ड और जापान के साथ संघ तैयार किया। जो बाद में इटली के साथ सम्मिलित हो गई। यह युद्ध मुख्य रूप से पश्चिमी और पूर्वी जर्मनी तथा आस्ट्रिया में हुआ।
- उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका को अलग करने वाली पनामा नहर से पहली बार एक जहाज होकर गुजरी।
- न्यूयार्क में तब पहली बार एक नई मकान बनाने की तकनीक सामने आयी जब आकाश को छूने वाली इमारत वूल-वर्थ-बिल्डिंग का उद्घाटन हुआ।
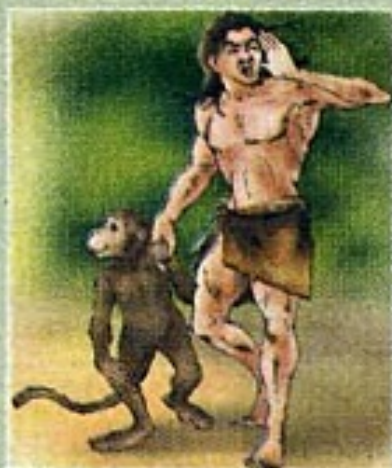
विदेशी भूमि पर भारत की सरकार

१९१५ में गांधीजी के स्वदेश आगमन से राष्ट्रीय आंदोलन ने और ज़ोर पकड़ा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मैं गोखले के मार्ग का अनुसरण करने जा रहा हूँ। दक्षिण अफ्रीका के फोनिक्स आश्रम के अपने मित्रों के साथ गांधीजी शांतिनिकेतन में रवींद्रनाथ टैगोर से मिले। टैगोर को 'सर' की उपाधि प्राप्त हो चुकी थी।

राजा महेंद्रप्रताप और बर्कतुल्ला ने काबुल में स्वतंत्र भारत के स्थापना की घोषणा कर दी।
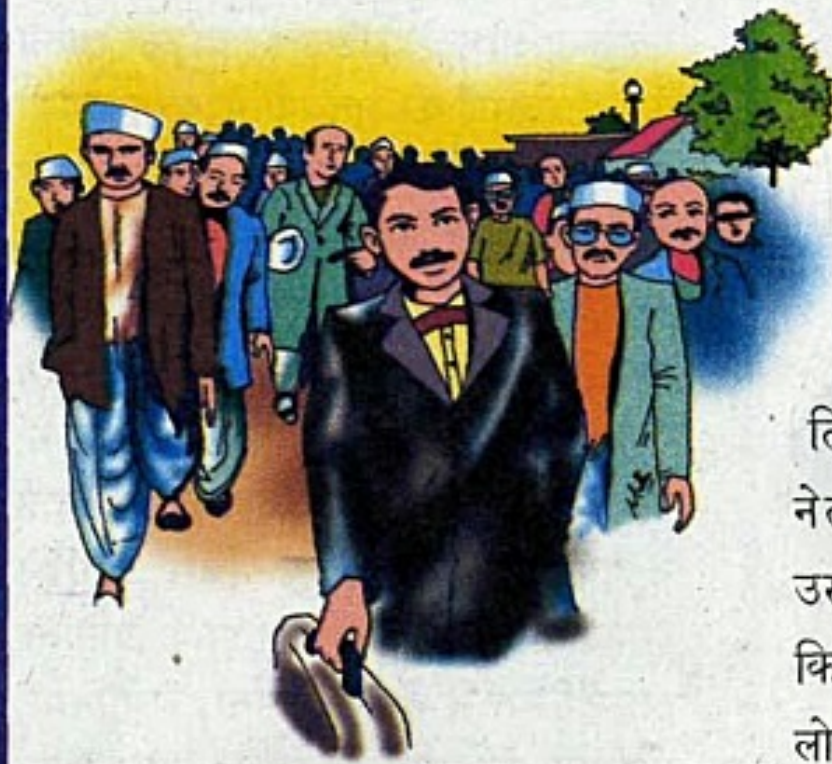
थियोसॉफिकल सोसॉयटी की अध्यक्षा डॉ. एनीबेसेंट ने १९१६ में 'होम रूल' आंदोलन का प्रारंभ किया। राजनीतिक अभिलाषाओं को संगठित करके स्थानीय स्वशासन की आवश्यकता को ब्रिटिश संसद को बतलाना ही उनका एकमात्र लक्ष्य था। होम रूल संघ की स्थापना हुई, किन्तु गोखले जैसे नेताओं का मानना था कि ऐसे भिन्न संघ की कोई आवश्यकता नहीं है। फिर भी बालगंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने उसमें प्रवेश किया, जिससे लोगों में विशेष रूप से उत्साह उत्पन्न हुआ।

डॉ. एनीबेसेन्ट

प्रोफेसर कार्वे ने पूना में सर्व प्रथम महिला विश्व विद्यालय की स्थापना की (१९३६ में इसे बंबई में स्थानांतरित कर दिया गया)। इससे महिला शिक्षा प्रसार को प्रोत्साहन मिला। दिल्ली में ख़ासकर महिलाओं के लिए एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुई, जिसका नाम है लेडी हार्डिंग कॉलेज।

प्रोफेसर कार्वे

१९१७ में कलकत्ता में संपन्न ३२वीं कांग्रेस महासभा की अध्यक्षता डॉ. एनिबेसेंट ने संभाली। इससे यह साबित हुआ कि उनके होम रूल के आंदोलन को स्वीकृति मिल गयी।

मांटेग-चेम्सफोर्ड के सुधारों में शामिल था - जिम्मेदार सरकार को एक-एक करके अधिकार की सुपुर्दगी।

बिहार के चंपारन में सत्याग्रह करने अपने सहयोगियों के साथ जाते समय, ब्रिटिश सरकार ने पहली बार गांधीजी को भारत की भूमि पर गिरफ़्तार किया। उनकी इस कार्रवाई ने पूरे देश को झकझोरा। ब्रिटिश एस्टेट में ठेके पर काम करनेवाले किसानों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया।

विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद १९१८ में ब्रिटिश सरकार ने टर्की को छः टुकडों में बाँटने का प्रयत्न किया। इसका विरोध करते हुए मुहम्मद व शौकत नामक दो भाईयों ने आंदोलन चलाया। चूँकि यह आंदोलन ब्रिटिश के खिलाफ था, इसलिए इसका असर भारत पर भी पड़ा। अली भाई भारत के नेताओं के आदर-पात्र बने। वी.पी. वार्डिया ने पहली बार मद्रास में ट्रेड यूनियन (मजदूर संघ) की स्थापना की, जिसका नेतृत्व गांधीजी ने किया और अहमदाबाद में टेक्स्टैल यूनियन की स्थापना की।

विश्व में और कहाँ........

- १९१५ में भूमि पर और समुद्र में युद्ध हुए। पश्चिम प्रांतों में मित्र पक्षों को विजय प्राप्त हुई। पूर्वी प्रांत में रूस को पीछे हटना पड़ा। ब्रिटिश के यात्रियों की लुसिताना नामक जहाज, जर्मन-यू नौका से टकरा गयी। फलस्वरूप १२०० लोग मारे गये। वह जहाज पानी में डूब गया। उसमें १२६ अमेरिकन भी थे। युद्ध में सम्मिलित होने के लिए अमेरिका पर दबाव बढ़ने लगा। फिर भी अध्यक्ष वूड्रो विलसन अपने तटस्थ सिद्धांतों से हटने के लिए तैयार नहीं हुए। पहली बार जर्मनी ने आँसू गैस को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया।
- १९१७ में रूस में क्रांति हुई, जिसके फलस्वरूप ३०० वर्षों तक का ज़ार शासन-काल समाप्त हो गया और साम्यवादियों ने सरकार बनायी। इस क्रांति का नेतृत्व संभाला लिओन ट्रोटस्की लेनिन ने।

लेनिन

कारखानों के मज़दूर, किसान, सैनिक तथा नौ सैनिकों ने इस क्रांति में भाग लिया।

सरकार से असहयोग

१९१९ में जलियाँनवाला बाग में किये गये नर-वध के उपरांत ब्रिटिश के विरुद्ध आग की ज्वाला भड़क उठी। राजद्रोह का आरोप लगाया जाता था और कानूनी कार्रवाई के बिना ही किसी को भी जेल में ठूंस दिया जाता था। सरकार ने यह अधिकार सभी अधिकारियों को दिया। यह रॉलट विधि के नाम से अमल में लाया गया। उसका विरोध करते हुए २५,००० लोग जलियानवाला बाग में इकट्ठे हुए। किसी चेतावनी के बिना बिलक्षण रहित होकर सैनिकों ने उनपर गोलियाँ चलायीं। वह हुक्म बड़ा ही भयानक था। इस घटना में ३८० लोग मारे गये। १२०० लोग घायल हुए। फलस्वरूप लोगों के क्रोध का पारा चढ़ गया। उनका आक्रोश सीमाओं को पार कर गया। यों जलियाँनवाला बाग की घटना स्वतंत्रता आंदोलन में एक मील का पत्थर साबित हुई। ब्रिटिश संसद में लिबरल दल के सांसदों ने आश्चर्य प्रकट किया और इसका कड़ा विरोध किया। सरकार के कुचलने की इस नीति को लेकर देश भर में असहयोग की सभाएँ हुई। रवींद्रनाथ टैगौर ने सरकार की इस नीति की भर्त्सना करते हुए 'सर' की उपाधि वापस कर दी।

खिलाफत आंदोलन ज़ोर पकड़ने लगा। खिलाफत ने सरकार से असहयोग करने का प्रस्ताव रखा। स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए यह एक व्यूह के रूप में लिया गया और १९२० में कलकत्ता में हुई कांग्रेस सभा में यह पारित हुआ। इसी साल नागपुर में संपन्न कांग्रेस सभा में 'स्वराज्य' प्रस्ताव भी पारित हुआ। गांधीजी से बिनती की गयी कि वे ही असहयोग आंदोलन का नेतृत्व करें।

लाला लजपतराय की अध्यक्षता में नागपुर में अखिल भारत महाविद्यालय में विद्यार्थियों की एक विराट सभा हुई। इसमें विद्यार्थी संघ की स्थापना का निर्णय लिया गया।

बटलर समिति की रिपोर्ट के अनुसार संस्थानों की स्वतंत्रता स्वीकार की गयी। इससे वे सरकार के समावेशों में स्वतंत्र संस्थानाधीश होने के नाते भाग ले सकते हैं।

विश्व में और कहाँ........

- ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रान्स, कनाडा, आस्ट्रेलिया ने मिल-जुलकर लड़ाई लड़ी। फलस्वरूप जर्मनी पीछे हट गया और तब पेरिस के समझौते के पत्र पर उसे हस्ताक्षर करना पड़ा। कुछ प्रांतों को खो देने के बाद रूस ने युद्ध बंद कर दिया और यों प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो गया।

- ब्रिटेन ने महिलाओं को मताधिकार दिया। पुरुष के मत देने की आयु २१ वर्ष कर दी गयी।

- १९१८, जून २८ को वेर्सोईलेज 'वेर्सालिन' संधि में हस्ताक्षर हुए।

- 'लीग आफ नेशन्स' की प्रथम बैठक पेरिस में हुई। अमेरिका के अध्यक्ष वुड्रों विल्सन ने अध्यक्षता संभाली।

- नवंबर १९ को २७ सदस्यों के साथ जेनेवा में लीग आफ नेशन्स की प्रथम आधिकारिक सभा हुई। विल्सन की अध्यक्षता में २४ सूत्र स्वीकार किये गये। एक और युद्ध का निराकरण हुआ। इन सूत्रों में से अंतिम सूत्र में बताया गया है कि चर्चाओं के द्वारा समस्याओं के समाधान ढूँढे जाएँ।

स्वतंत्रता आंदोलन में विद्यार्थी

भारत की स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में १२ जनवरी १९२१ बड़ा ही महत्व रखता है। लार्ड कन्नॉट ने मद्रास में प्रथम विधान सभा परिषद का आरम्भ किया। कांग्रेस के केवल मुख्य नेता ही इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए। लार्ड कन्नॉट के आगमन के विरोध में प्रदर्शन हुए। कुछ दिनों के बाद उसी साल वेल्स के राजा भारत का भ्रमण करने आये। प्रजा का अभिप्राय स्पष्ट रूप में मालूम हो गया। जहाँ-जहाँ वे गये, उनके विरुद्ध काले झंडे दिखाये गये और वापस चले जाने को कहा गया।

अहमदाबाद की कांग्रेस सभा में निर्णय लिया गया कि असहयोग आंदोलन बरकरार रखा जाए। पंजाब के गुजराँवाला में जो सभा हुई उसमें प्रस्ताव पारित किया गया कि विद्यार्थी कालेजों व विश्वविद्यालयों का बहिष्कार करें और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लें।

१९२२ में गोरखपुर जिले के चौरीचौरा गाँव में २००० कांग्रेस कार्यकर्ता व किसानों ने मिलकर एक प्रदर्शनी की। लोगों को छिन्न-भिन्न करने के लिए पुलिस ने गोलियाँ चलायीं। इससे आंदोलन ने तीव्र रूप धारण किया। वह हिंसात्मक बना। जनता ने पुलिस चौकी पर धावा बोल दिया और २८ पुलिसवालों को मार डाला। इस घटना के एक सप्ताह के बाद कांग्रेस की एक बैठक हुई और गांधीजी के आग्रह पर असहयोग आंदोलन को बंद करने का निश्चय किया गया।

कांग्रेस दल में फूट पड़ी। चित्तरंजनदास और मोतीलाल के नेतृत्व में स्वराज्य पार्टी की स्थापना हुई। गया में संपन्न सभा में उनका वाद था कि भारतीयों को विधानसभा परिषदों में प्रवेश करना चाहिये। सी. राजगोपालाचारी व उनके कुछ साथियों ने इसका कड़ा विरोध किया।

चित्तरंजनदास

मोतीलाल नेहरू

राजगोपालाचारी

- रवींद्रनाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन की स्थापना की। भाषा, धर्म, साहित्य, संगीत, ललित कलाओं के अध्ययन के लिए विश्व भारती के नाम से स्थापित यह संस्था विश्व भर में प्रसिद्ध हुई।

(अगले अंक में भारत गणतंत्र बना)

राजमार्ग

आसपास के देशों के साथ तुलना की जाए तो चंपक पिछडे देशों में से है।पंचडसेन ने इसका कारण जानना चाहा। इसके लिए उन्होने अपने पुत्र विवेकसेन को प्रगतिशील देशों में भेजा, ताकि वह वहाँ स्वंय जाकर जान सके कि कौन-सी पद्धतियाँ उन देशों में विशेष प्रसिद्ध हुई हैं। लोगों द्वारा किये गये उनके कार्यो को देखकर विवेकसेन चकित रह गया। उसने भी हृदयपूर्वक चाहा कि अपने देश के लोग भी इनका अनुकरण करें और प्रगति-पथ पर अगसर हों। तत्संबंधी विवरण जानने में वह लगा हुआ था कि इतने में खबर आयी कि उसके पिता का आकस्मिक देहांत हो गया। वह तुरंत अपने देश में लौट आया।पच्चीस साल की उम्र में ही वह देश का अधिपति बना।

विवेकसेन के मन में देश की प्रगति व विकास को लेकर कितने ही विचार थे, योजनाऐं थीं। किन्तु खजाने में धन बहुत ही कम था, इसलिए वह अपनी योजनाओं को कार्यान्वित नहीं कर सका। नए करों को असल में ले आने का उसका इरादा था। परंतु वह ऐसा भी नहीं कर सका, क्योंकि जनता उनके खिलाफ़ थी। उनकी शिकायत थी कि "जबकि पुराने करों को चुकाना ही हमारे लिए दुसह्य हो रहा है, नये करों का भार हम कैसे सह पायेंगें? कैसे चुका पायेंगें?"

चंपक देश में कितनी ही नदियाँ हैं। पानी की कोई कमी नहीं। फसलें अच्छी हो रही हैं। उसकी समझ में नही आया कि ऐसी स्थिति में भी देश का बिकास क्यों नहीं हो पा रहा है। उसे लगा कि इस समस्या का परिष्कार जनता ही कर सकती है, वे ही इसके योग्य हैं। समस्या की गहराई में जाने के लिए बहुरूपिया बनकर पह कुछ समय तक देश भर में घूमता रहा।

विवेक ने एक बार एक युवक को पेड के नीचे सोते हुए देखा, तो उसे जगाया और पूछा दिन दहाड़े जैसे घोड़े बेचकर सो रहे हो।क्या तुझे कोई दूसरा काम नहीं?

"काम करने की मुझे क्या ज़रूरत है? जब कभी भी मांगू पेट भर खाना खिलानेवाले पुण्यवान इस गाँव भर में हैं।" उस युवक ने कहा।

उसके जवाब से चकित विवेक ने उससे कहा

सुमंतवर्मा

"किसी एक ऐसे आदमी का नाम बताओ, जो मांगते ही तुम्हें खाना खिलाता है!"

उस युवक ने ग्रामाधिकारी गौरव का नाम बताया। विवेक उसके घर गया तो वहाँ उसका अच्छा आदर सत्कार हुआ। भोजन करने के बाद उसने गौरव से कहा, "पेट भर खा लेने के बाद आप पर आरोप लगा रहा हूँ, ऐसा न समझियेगा। क्या आपको कभी ऐसा नहीं लगा कि घर आये लोगों को पेट भर खिलाकर आप सुस्त लोगों को प्रोत्साहन दे रहे हैं? उनकी संख्या को बढ़ा रहे हैं?"

गौरव ने एक पल भर तक सोचकर कहा जानता हूँ। पर करें भी क्या? फसलें अच्छी हो रही हैं। उनका उपयोग भी तो करना है। उनका उपयोग न करना भी तो ग़लत ही है न?"

"हमारी फसलें खरीदने के लिए कितने ही देश तैयार हैं। इन्हें बेचने से आपकी आमदनी भी दुगनी-तिगुनी हो सकती है", विवेक ने कहा।

ग्रामाधिकारी ने हँसते हुए कहा, "हमारे देश में अच्छी सड़के नही हैं। इस कारण धान को दूर देशों में भेजना सम्भव नही है। इसके लिए आवश्यक सुविधाएँ नही के बराबर हैं।एक गाँव से दूसरे गाँव तक जाना ही जब मुश्किल हो रहा है तो दूर देशों तक धान कैसे भेजा जा सकता है? इन सुविधाओं के अभाव में जनता के ज्ञान का दायरा भी सीमित हो जाता है। वे कूप के मेंढ़क समान हैं। तुम कहते हो कि युवक सुस्त होते जा रहे हैं। क्यों न हों, क्योकि आवश्यकता से अधिक फ़सलें हो रही हैं, उन्हें बेचकर कमाने का कोई दूसरा रास्ता भी तो उनके लिए खुला नहीं है। हम तो चाहते हैं कि उत्पादन कम किया जाए। ऐसी स्थिति में इन्हें किसी
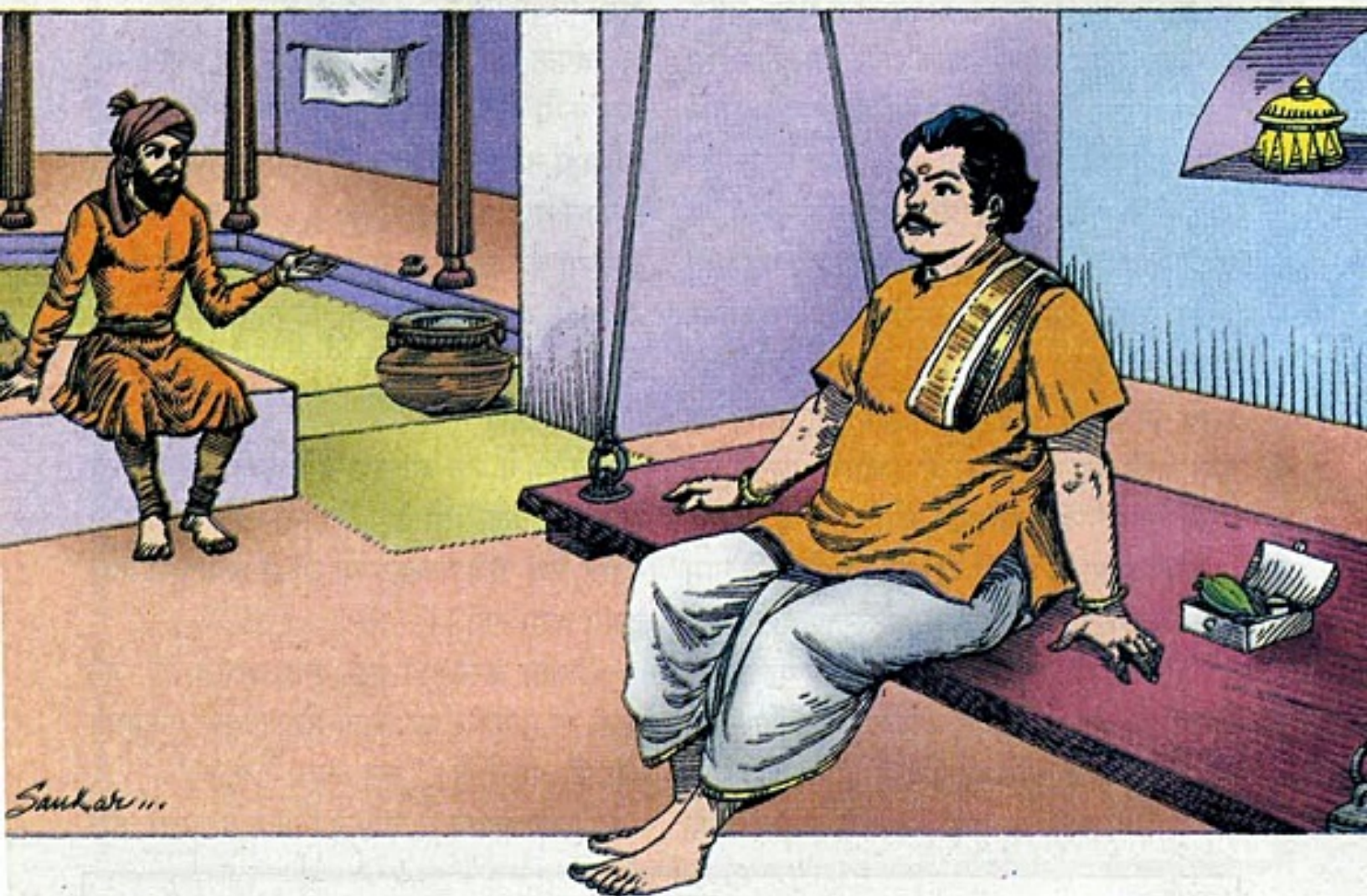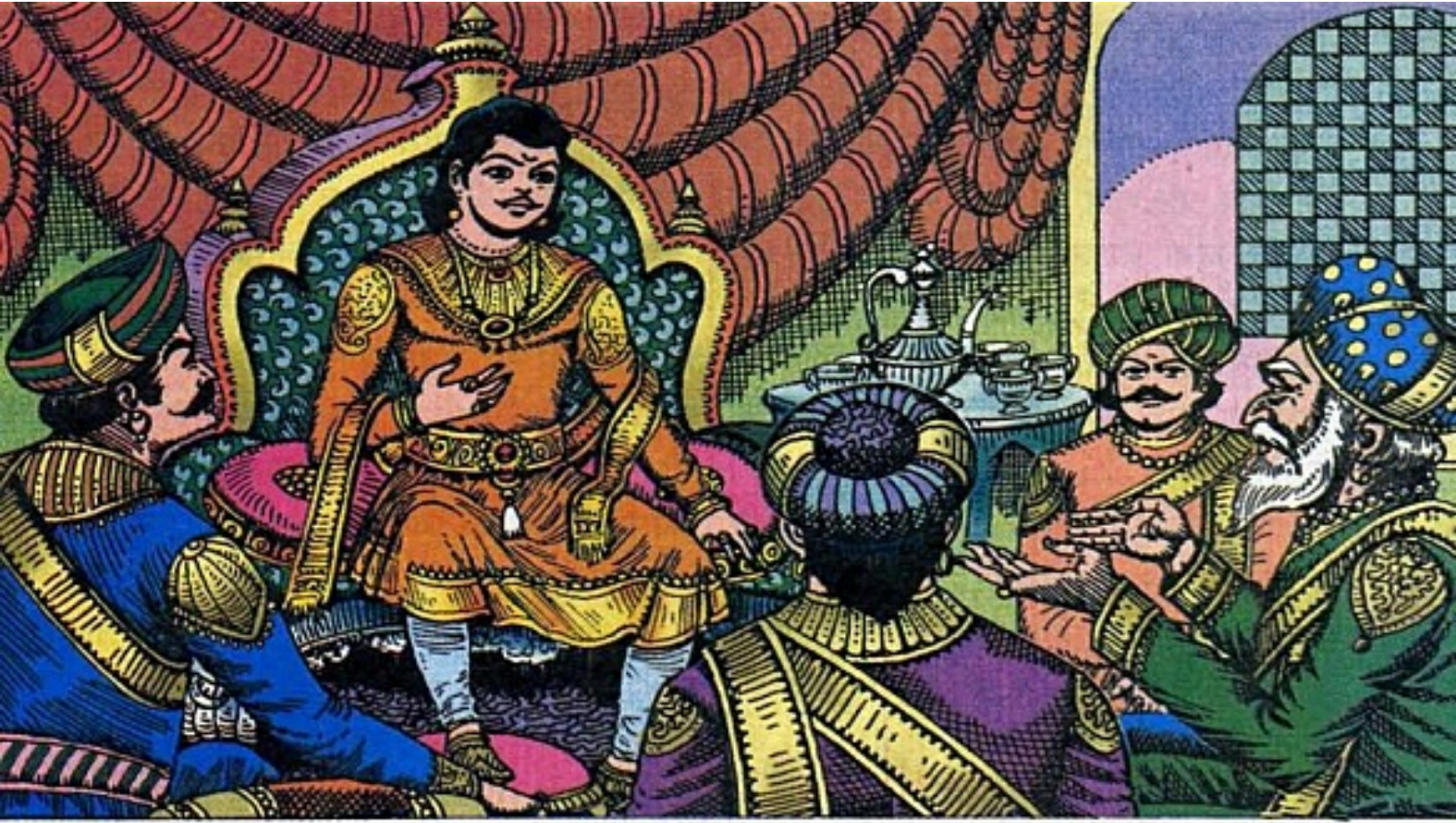
और देश को बेचना केवल दिवा स्वप्न है।''

''उत्पादन और बढ़ाइये। युवकों को और प्रोत्साहन दीजिये। आसपास के राजमार्गों का उपयोग कीजिये।'', विवेक ने उपाय सुझाया।

ग्रामाधिकारी ने घबराते हुए कहा, ''बापरे, यह काम तो मुझसे नहीं होगा, क्योंकि मैं केवल ग्रामाधिकारी मात्र हूँ। छोटे-छोटे काम ही करने का मुझे अधिकार है।''

''तो तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि पूरी ग़लती तुम्हारे राजा की ही है'', कहते हुए विवेक ने जान-बूझकर राजा को गालियाँ दीं।

ग्रामाधिकारी उसकी बातों से बहुत नाराज़ हुआ। उसने विवेक से कहा, ''तुम परदेशी लगते हो, इसलिए तुम्हें सावधान मात्र करके क्षमा कर रहा हूँ। हम अपने देश के राजा का बहुत आदर करते हैं। उनके प्रति हमारे हृदय में श्रद्धा व भक्ति है। उनका पूरा वंश हमारे लिए पूज्यनीय है। तुमने उनके विरुद्ध एक भी बात निकाली तो तुम्हारी जान की ख़ैर नही।''

उसकी बातों पर विवेक मन ही मन खुश हुआ। देश के बारे में जो कुछ जानना था, वह जान चुका। इसलिए बहुत दिनों तक यात्रा करते हुए राजधानी पहुँचा।

दूसरे ही दिन विवेक ने अपने मंत्रियों को बुलाकर कहा, ''अपने देश की दुर्स्थिति का कारण जान गया हूँ। किन्तु मैं यह जान नही पाया हूँ कि इस स्थिति को सुधारने के लिए क्या किया जाए?'' फिर उसने देशाटन के अपने अनुभव सुनाये।

''प्रभु, आप अपनी इस असहाय स्थिति पर चिंतित मत होइये। राजधानी नगर में ही चंद्रभानु नामक एक महाकवि हैं। उनके साथ बैठकर कविता-पाठ में लग जाइये। आपकी सारी चिंताएँ दूर हो जायेंगी और आपका मन हर्षोल्लास से भर जायेगा'', एक बृन्द मंत्री ने सलाह दी।

''जिस चंद्रभानु कवि का आप जिक्र कर रहे हैं, उनके बारे में मैं नहीं जानता, किन्तु शिवपुरी

नामक गाँव में वसुनाथ नामक एक कवि हैं। मेरी दृष्टि में वे श्रेष्ठ कवि हैं। स्वंय जाकर मैं उनका सम्मान करना चाहता हूँ। हमें चाहिये कि हम कवियों को अपने यहाँ बुलाकर उनका सम्मान करें। इसके लिए आवश्यक तैयारियाँ अभी से शुरू करें तो अच्छा होगा", विवेक ने अपना अभिप्राय व्यक्त किया।

राजा की आज्ञा अनुसार घोषणा हुई कि संक्रांति के दिन राजा स्वंय शिवपुरी जायेंगे और कवि वसुनाथ का सम्मान करेंगें। इसके पहले ही बहुत से बड़े-बड़े कवि शिवपुरी गये और वसुनाथ से मिले। किन्तु उन कवियों को उनमें किसी भी प्रकार की विशिष्टता दृष्टिगोचर नहीं हुई।

निश्चित कार्यक्रम के अनुसार विवेक शिवपुरी जाने निकल पड़ा। घोडा-गाडी चिकने राजमार्ग पर शिवपुरी तक बेरोकटोक गयी।

शिवपुरी पहुँचने के बाद राजा ने कवि वसुनाथ से कहा, "महाराज...! मैं नहीं जानता कि आप कितने बड़े कवि हैं। किन्तु मैने जैसे ही आपका सम्मान करने शिवपुरी पहुँचने की घोषणा की, राजधानी और शिवपुरी के बीच में राजमार्ग की व्यवस्था की गयी। जनता ने स्वंय ही यह भार अपने ऊपर लिया। उन्होंनें साबित भी कर दिया कि वे मिलजुलकर ऐसे कार्य भी सुचार रूप से कर सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि दूसरे गाँव भी ऐसे आदर्श का अनुकरण करें। तब देश भर में राजमार्ग ही राजमार्ग होंगे। कहीं भी निश्चित रूप से जाने की सुविधा होगी। जिस उद्देश्य से मैने आपके सम्मान का यहाँ प्रबंध किया, वह उदेश्य संपूर्ण हुआ। इस अवसर पर मैं आपका अभिनंदन करता हूँ।"

तब से शिवपुरी का विकास होता गया। लोग जान गये कि राजमार्ग केवल राजा के उपयोग के लिए ही नहीं बल्कि जनता भी उनका उपयोग कर सकती है। इसलिए जनता स्वंय राजमार्ग के निर्णय में जी-जान से लग गयी। अब उन राजमार्ग से लोग अपना माल दूसरी जगहों पर ले जाने लगे। उनकी कमाई में भी पर्याप्त वृद्धि हुई। अच्छे, साफ-सुथरे और चिकने सभी मार्ग अब राजमार्ग कहलाये जाने लगे।

महाभारत

युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद पांडव गंगा के तट पर पहुँचे। अपने मृत रिश्तेदारों के लिए तिलोदक और दश दान करने के बाद महीने भर शोक मनाया, धृतराष्ट्र, विदुर तथा नारियों के साथ नगर के बाहर एक पर्णकुटी में समय बिताया।

इसके उपरांत युधिष्ठिर को देखने व्यास आदि मुनि, उनके शिष्य, ब्राह्मण और गृहस्थ भी आये। युधिष्ठिर ने उन सब का यथोचित अतिथि-सत्कार किया। उन्हें उचित स्थानों पर बिठाकर वह भी बैठ गया।

तब युधिष्ठिर ने उन लोगों से कहा - कृष्ण, भीम,. अर्जुन आदि ने मुझे विजय पहुँचायी है, लेकिन मुझे यह विजय प्रतीत नहीं होती। मैंने अपने ज्ञानियों का वध किया है, अभिमन्यु तथा द्रौपदी के पुत्रों को खो दिया है। ऐसी हालत में राज्य का यह भोग मुझे कैसे सुख पहुँचा सकता है? इसके अलावा तिलोदक के समय मेरी माता ने यह रहस्य प्रकट किया कि महान दानी और महावीर कर्ण मेरे भाई हैं, मैं समझ नहीं पाता कि ऐसे महारथी का देहांत क्यों हो गया है ?

ये बातें सुनने पर नारद ने कर्ण के श्रापों का परिचय युधिष्ठिर को कराया।

कर्ण जिस वक्त द्रोण के यहाँ धनुर्विद्या सीख रहा था, उस समय वह अर्जुन की

धनुर्विद्या को देख ईर्ष्या करता था। इसी प्रकार उसे युधिष्ठिर की बुद्धिमत्ता, भीम का बाहुबल, नकुल और सहदेव का सौजन्य तथा कृष्णार्जुन की मैत्री के प्रति ईर्ष्या का भाव था। इसी कारण उसने दुर्योधन की मैत्री प्राप्त की।

द्रोण के यहाँ धनुर्विद्या सीखते समय ही कर्ण एक दिन गुप्तरूप से द्रोण के पास जाकर बोला - "गुरुजी...! आप के मन में अपने शिष्यों के प्रति कोई पक्षपात नहीं है न ? युद्ध में अर्जुन को जीतने की मेरी तीव्र इच्छा है। मुझे ब्रह्मास्त्र के उपयोग तथा वापसी की विद्या का उपदेश दीजिए।"

द्रोणाचार्य अर्जुन का पक्षपाती था। इसलिए उसने कर्ण से कहा तुम सूत पुत्र हो ! ब्रह्मास्त्र ब्राह्मण और क्षत्रियों को छोड़ अन्यों को दिया नहीं जा सकता है।

यह बात सुनने पर कर्ण महेन्द्रगिरि के समीप तपस्या करनेवाले परशुराम के पास गया, उन्हें साष्टांग प्रणाम करके बोला - "महात्मा ! मैं भृगुवंशी ब्राह्मण हूँ। मुझे आप अपने शिष्य के रूप में ग्रहण कीजिए।" इस पर परशुराम ने मान लिया। परशुराम ने कर्ण को अनेक अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग तथा उनकी वापसी की विद्याएँ सिखाईं। उस प्रदेश के यक्ष और गंधर्वों के साथ मैत्री पूर्वक व्यवहार करते कर्ण अपनी अस्त्र-विद्याओं के द्वारा उन्हें भी चकित किया करता था।

उन्हीं दिनों में एक बार कर्ण अपने गुरु के आश्रम के समीप समुद्र तट पर धनुष और बाण लेकर घूम रहा था, वहाँ पर उसने एक गाय को देख अपने बाण से उसे मार डाला। बाद में कर्ण को मालूम हुआ कि वह गाय एक ब्राह्मण की होमधनु है। तुरंत उस ब्राह्मण के पास जाकर कर्ण ने क्षमा माँगी, पर वह ब्राह्मण शांत न हुआ, उसने श्राप दिया -"तुम जब युद्ध-भूमि में युद्ध करते रहोगे, तब तुम्हारे रथ का एक पहिया ज़मीन में धंस जाएगा, तब तुम शत्रु के हाथों से मेरी गाय की तरह मारे जाओगे।"

इसके बाद कर्ण ने परशुराम को अपनी निरंतर सेवाओं तथा विद्या के कौशल द्वारा प्रसन्न किया और उनके यहाँ सारा धनुर्वेद सीख कर ब्रह्मास्त्र का उपदेश भी प्राप्त किया। लेकिन उन्हीं दिनों में एक घटना घटी। परशुराम कर्ण की जांघ पर सिर रखे सो रहा था। उस वक्त कोई कीड़ा कर्ण की जांघ में छेद बनाने लगा। कर्ण ज़बर्दस्ती उस पीड़ा को सहते

दुर्योधन उसे ज़बर्दस्ती उठा ले जा रहा था, तब अनेक राजा उस पर हमला कर बैठे, फिर भी कर्ण ने दुर्योधन को विजय दिलाई।

एक बार कर्ण ने अजेय जरासंध को हराया और उससे मालिनी नामक एक बड़े नगर को उपहार के रूप में ग्रहण किया। उसके पराक्रम को देख चकित हो इंद्र ने अर्जुन के वास्ते कवच और कुण्डल दान में ले लिया। युद्ध में कर्ण की मृत्यु के लिए ये सब कारण बने।

नारद के द्वारा युधिष्ठिर ने कर्ण की सारी बातें जान लीं, उन सब का स्मरण करके बताया -"माता-पिता अपनी संतान के वास्ते असंख्य यातनाएँ झेलते हैं। उनके सुख के वास्ते ही माताएँ नौ महीने गर्भ धारण कर प्रसव पीड़ा का अनुभव करती हैं। सुख-भोगों से वंचित हो कितने युवक इस युद्ध में बुरी मौत मरे। क्षत्रिय धर्म को धिक्कार है! राज्य के वास्ते मैंने कैसा पाप किया है! मुझे यह राज्य नहीं चाहिए! अर्जुन, तुम्हीं इस पर शासन करो। मैं जप-तप और तीर्थ यात्राएँ करूँगा।"

ये बातें सुन अर्जुन ने अपमान और क्रोध का भी अनुभव किया। उसने युधिष्ठिर से कहा- "महाराज, आपने अपने राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए क्षत्रिय धर्म का अवलंबन किया है। राज्य प्राप्त होने के बाद भीख माँगने की बात सोचना असंगत मालूम होता है। यदि भीख ही माँगनी थी, तो इतने सारे लोगों का वध क्यों करना चाहिए था? इस वक्त यदि आप भीख माँगना चाहें तो क्या सब लोग आपको देख हँस नहीं पड़ेंगे? नहुष ने बताया

अपने गुरु की निद्रा में भंग न हो, इस ख्याल से वह अविचल बैठा रहा। वहाँ पर खून बहने लगा।

थोड़ी देर बाद परशुराम उठ बैठा, वहाँ पर खून तथा कर्ण की जांघ में छेद बनाने वाले कीड़े को देख बोला - "अरे, सुनो, ब्राह्मण में ऐसी सहनशीलता नहीं हो सकती! तुम सच-सच बताओ, कौन हो?"

कर्ण यह सोचकर डर गया कि सच न बताने पर परशुराम उसे श्राप देंगे। इसलिए उसने कहा कि वह सूतवंशी है। इस पर परशुराम ने उसे श्राप दिया कि युद्ध के समय कर्ण को ब्रह्मास्त्र का स्मरण न रहे।

इतने सारे श्रापों का शिकार होकर भी कर्ण महान योद्धा कहलाया। कलिंग देश के राजपुर के राजा चित्रांगद की पुत्री के स्वयंवर के समय

था कि दारिद्रय की कामना कभी नहीं करनी चाहिए। समस्त धर्मों का मूल, धन है। इसलिए आप राज्य को ग्रहण कीजिए! अश्वमेध यज्ञ करके समस्त पापों से मुक्त हो जाइए!

भीम ने अर्जुन का समर्थन करते हुए कहा- "राजधर्म की निंदा करने में क्या मतलब है? शत्रु का बध करने में दया कैसी? हिंसा क्या है? प्रयत्न पूर्वक दुर्योधन आदि का वध क्या भीख माँगने के लिए किया गया था? यह बात अगर हमें पहले मालूम हो जाती तो क्या हम आयुध धारण करते? इतने सारे लोगों का बध करते? हम भी यथाशक्ति भीख माँगते! आप ऐसी बातें करते हैं, जैसे कुआँ खोदने के बाद उसमें से पानी लेना नहीं चाहते। अब आपको दोष देने की ज़रूरत नहीं। गलती तो हमारी है, आप की बात मानकर बलवान होते हुए भी हमने निर्बलों जैसा व्यवहार किया। अब इन सारी बातों को छोड़कर राज्य का शासन कीजिए।"

नकुल और सहदेव ने भी इसी प्रकार युधिष्ठिर को चेतावनी दी।

अंत में द्रौपदी ने यों समझाया, "आप अपने भाईयों के कहे अनुसार कीजिए। बनवास के समय जब वे लोग असहनीय कष्ट झेल रहे थे, तब आपने उन्हें सांत्वना दी थी -"ये कष्ट सदा के लिए नहीं रहेंगे, शीघ्र ही दुर्योधन को पराजित कर अपने राज्य को प्राप्त कर लेंगे।" अब फिर एक बार उन बातों का स्मरण कीजिए। अब आप जो बातें कह रहे हैं, उनसे ये हतोत्साहित हो रहे हैं। क्या आप ने बहुत
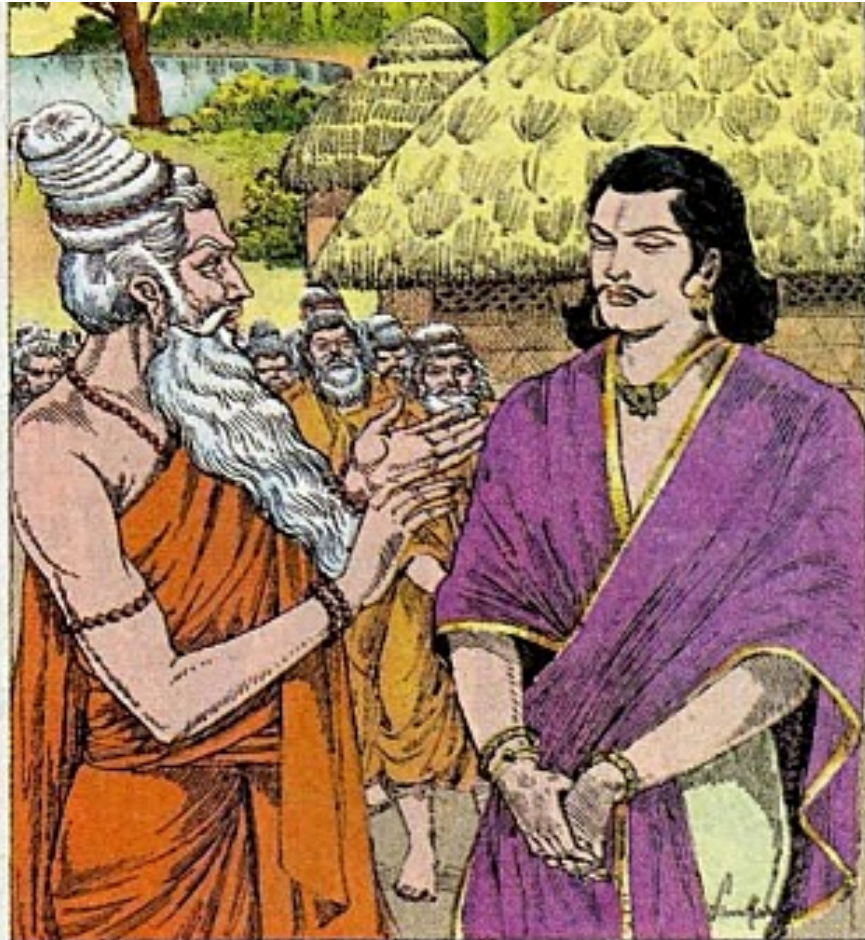
समय पूर्व अनेक राज्य युद्ध करके ही जीत नहीं लिये थे? राज्य संपादन के लिए क्या और कोई मार्ग है? आप ऐसी ही बातें करेंगे तो लोग कहेंगे कि युधिष्ठिर मतिभ्रष्ट हो गये हैं। राज्य का शासन करना गलत नहीं है। अंबरीष, माँधाता जैसे महानुभावों ने राज्य किये हैं।"

इसके बाद अनेक ऋषियों ने युधिष्ठिर को हितोपदेश किया। महर्षि व्यास ने युधिष्ठिर से कहा - "यदि हमारा बध करने कोई वेद-वेदांगों का पारंगत भी आता है तो उसका बध किया जा सकता है। इससे हम ब्रह्महत्या के दोष के भागी न होंगे।"

अपने भाइयों के साथ महर्षि व्यास और कृष्ण के समझाने पर युधिष्ठिर अपने संदेह और चिंता को त्याग कर राज्य करने के लिए

तैयार हो गया।

युधिष्ठिर के वास्ते रथ तैयार हो गया। उसमें सोलह सफ़ेद घोड़े जुते गये। सफ़ेद स्तम्भ जोड़े गये। रस्से पकड़कर भीम सारथी के स्थान पर बैठ गया। अर्जुन ने युधिष्ठिर के वास्ते सफ़ेद छत्र पकड़ा। नकुल और सहदेव ने उनके लिए चामर धारण किये। युधिष्ठिर के रथ के पीछे युयुत्स का रथ चल पड़ा। उसके पीछे कृष्ण और सात्यकी दो घोड़ों से जुते रथ पर चले। इस जुलूस के आगे गांधारी धृतराष्ट्र, कौरव नारियाँ, कुंती, द्रौपदी अलग अलग वाहनों में बिदुर के साथ निकले। उनके पीछे चतुरंगी सेना चल पड़ी। बंदी जनों के स्तोत्र-पाठों के बीच युधिष्ठिर हस्तिनापुर पहुँचे। सारा नगर सुंदर ढंग से सजाया गया था। सर्वत्र सफ़ेद पुष्पों के तोरण और सफ़ेद झंड़ियाँ सजायी गयीं थीं।

वैभवपूर्वक जब युधिष्ठिर नगर में प्रवेश करने लगे, तब हज़ारों नागरिक और नारियाँ उन्हें देखने आये। मार्गों पर खड़े हो अपना हर्ष व्यक्त करने लगे। मंत्री तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों ने आकर कहा - "राजेन्द्र ! हमारे सौभाग्य से आपने शत्रु को पराजित कर, धर्मपूर्वक पुनः राज्य प्राप्त किया।" ब्राह्मणों ने युधिष्ठिर को आशीर्वाद दिया।

युधिष्ठिर ने राजमहल में प्रवेश करके धौम्य तथा धृतराष्ट्र को प्रणाम किया और देवताओं की आराधना की। इतने में बड़ा कोलाहल पैदा हुआ। दुर्योधन का मित्र चार्वाक युधिष्ठिर के निकट आकर बोला -"ज्ञानियों का वध करके तुम क्या भोगने जा रहे हो ? तुम इस तरह की निकृष्ट ज़िंदगी न जिओगे तो क्या होगा ?"

यह बात सुनकर युधिष्ठिर शर्मिंदा हुआ और ब्राह्मणों की ओर मुड़कर बोला - "मुझ पर अनुग्रह कीजिए ! मैं पहले से ही चिंता में डूबा हुआ हूँ। मेरी निंदा न कीजिए।"

इस पर ब्राह्मणों ने कहा - "राजन, चार्वाक का यह विचार हमारा विचार नहीं है। यह दुर्योधन का मित्र है। इसीलिए ऐसी बातें बकता है। आपको और आपके भाईयों को किसी भी प्रकार का अशुभ न होगा। यों कहकर उसी वक्त सब ब्राह्मणों ने मिलकर चार्वाक को मार डाला। युधिष्ठिर की मानसिक शांति के लिए कृष्ण ने युक्ति पूर्वक एक कहानी सुनायी कि चार्वाक कृतयुग में एक राक्षस था। उसने बदरीवन में तपस्या करके ब्रह्मा को प्रत्यक्ष किया और यह वरदान पाया था कि ब्राह्मणों

को छोड़ अन्य लोगों के हाथों में उसकी मौत न हो।"

इसके बाद युधिष्ठिर यथाविधि राज्याभिषिक्त हुआ। धौम्य ने एक वेदिका का निर्माण कराया। उस पर व्याघ्र चर्म बिछवा कर उस पर युधिष्ठिर तथा द्रौपदी को बिठाया, तदुपरांत धौम्य ने आग पैदा करके युधिष्ठिर के द्वारा उसमें होम कराया। तब कृष्ण ने एक शंख-द्वारा युधिष्ठिर का अभिषेक करके आशीर्वाद दिया कि तुम सारी पृथ्वी के राजा बनो। इस पर धृतराष्ट्र तथा जनता ने अपनी सम्मत्ति प्रकट की। मंगल वाद्य बज उठे। युधिष्ठिर ने जनता के द्वारा उपहार ग्रहण किया और ब्राह्मणों का सत्कार किया।

इसके बाद युधिष्ठिर ने जनता से कहा- "महाजनों, महाराजा धृतराष्ट्र हमारे लिए देवता के समान हैं। हमारे प्रति जो लोग विश्वास रखते हैं, वे सब उन्हीं के शासन को स्वीकार करें। हम लोग केवल उनकी सेवा करने के लिए जीवित हैं। मुझे तथा आप लोगों के लिए भी वे ही राजा हैं।"

तब युधिष्ठिर ने भीम को युवराजा घोषित किया और विदुर को मंत्री नियुक्त किया। संजय कोशाध्यक्ष तथा सलाहकार बने। नकुल भृत्यों का वेतन निर्णय करने, अर्जुन राज्य का योग-क्षेम देखने तथा धौम्य देवता एवं ब्राह्मणों के कार्य देखने के लिए नियुक्त हुए। सहदेव का कार्य सदा युधिष्ठिर के साथ रहने का था।

ये सारे कार्य होने के बाद युद्ध में मरे हुए लोगों के लिए श्राद्ध कार्य किये गये। भूदान किये गये। धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रों के लिए तथा युधिष्ठिर ने द्रोण, कर्ण, धृष्टद्युम्न, घटोत्कच और अभिमन्यु के लिए अलग-अलग श्राद्ध कार्य किये। मृत व्यक्तियों के स्मारकों के रूप में सराय, तालाब आदि बनवाये गये। तब जनता के कुशल-क्षेम का ख्याल रखते युधिष्ठिर शासन करने लगे। क्रमशः
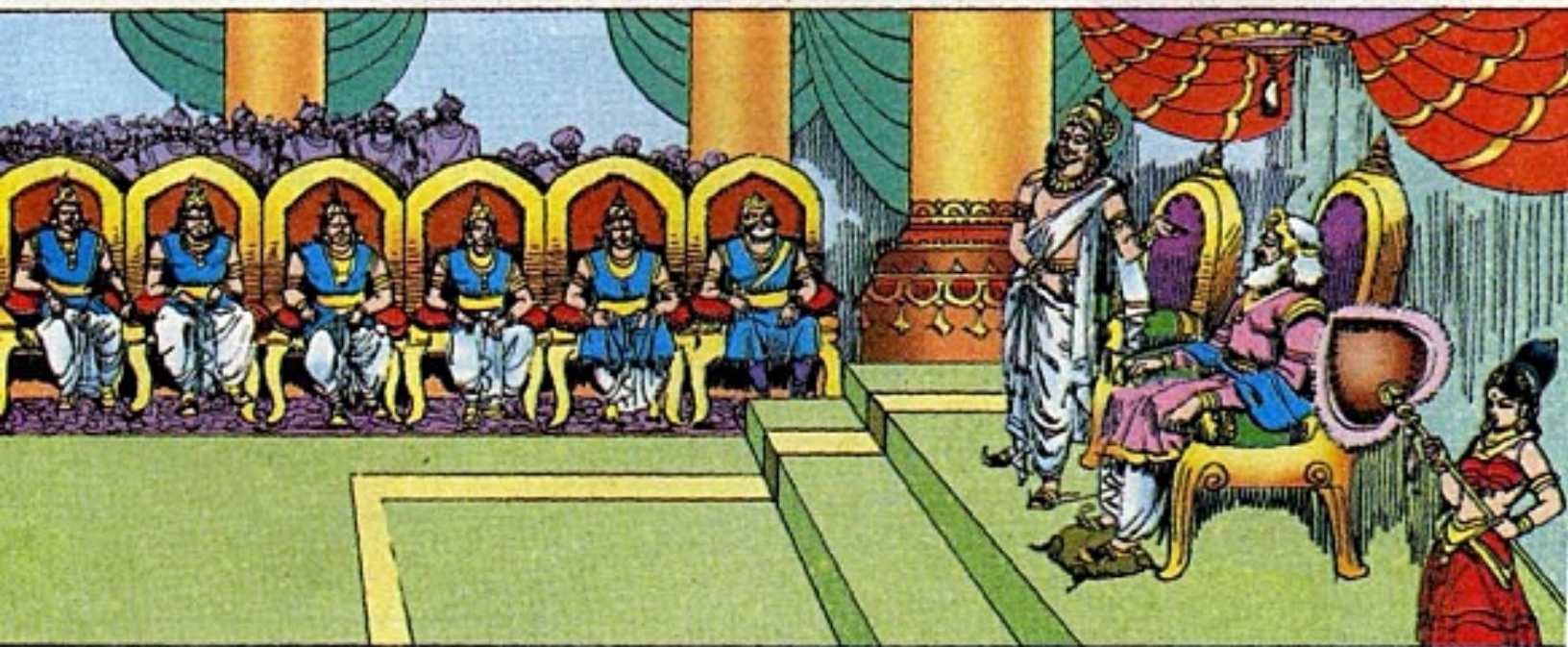
परोपकारी समीर
(गत माह से क्रमशः) समीर और शेरु मंगलपुरा पहुँचे।
गाँव वाले भूत से डरे हुए थे। समीर ने गोविन्द सेठ को बरगद के पेड़ के आस-पास घूमते हुए देखा।
तुम कौन हो ? और क्या चाहते हो ?
मंगईया सेठ...! मंगईया सेठ...!

गोविन्द सन्यासी को बैठने के लिए आसन देता है।
मैं जोगिन्दर का पुत्र हूँ। मैं मंगईया सेठ से मिलना चाहता हूँ। मुझे उनसे कुछ काम है।

मंगईया सेठ मेरे पिता थे। अब वे नहीं रहे। तुम्हें उनसे क्या काम है ?

वे मेरे पिता के कर्जदार थे। उन्होंने मेरे पिता से एक लाख रुपए उधार लिए थे। मैं वे रुपए वापस लेने आया हूँ। कृपया मुझे व रुपए दो और मुझे जाने दो।

लेकिन मेरे पिता ने उनसे पैसे क्यों लिए? वैसे भी मेरे पास एक भी पैसा नहीं है। यदि तुम चाहो तो मेरे घर की तलाशी ले सकते हो।
गोविन्द सेठ ने तिजोरी खोलकर दिखायी।

समीर अगली योजना बनाते हुए गोविन्द सेठ के घर से चला जाता है।

गोविन्द सेठ चिन्ता में पड़ गया।

यदि वह भूत मेरे पीछे आ गया तो मैं क्या करूँगा ?

वह बरगद के पेड़ के पास गया और भूत का पहनावा पहन लिया।
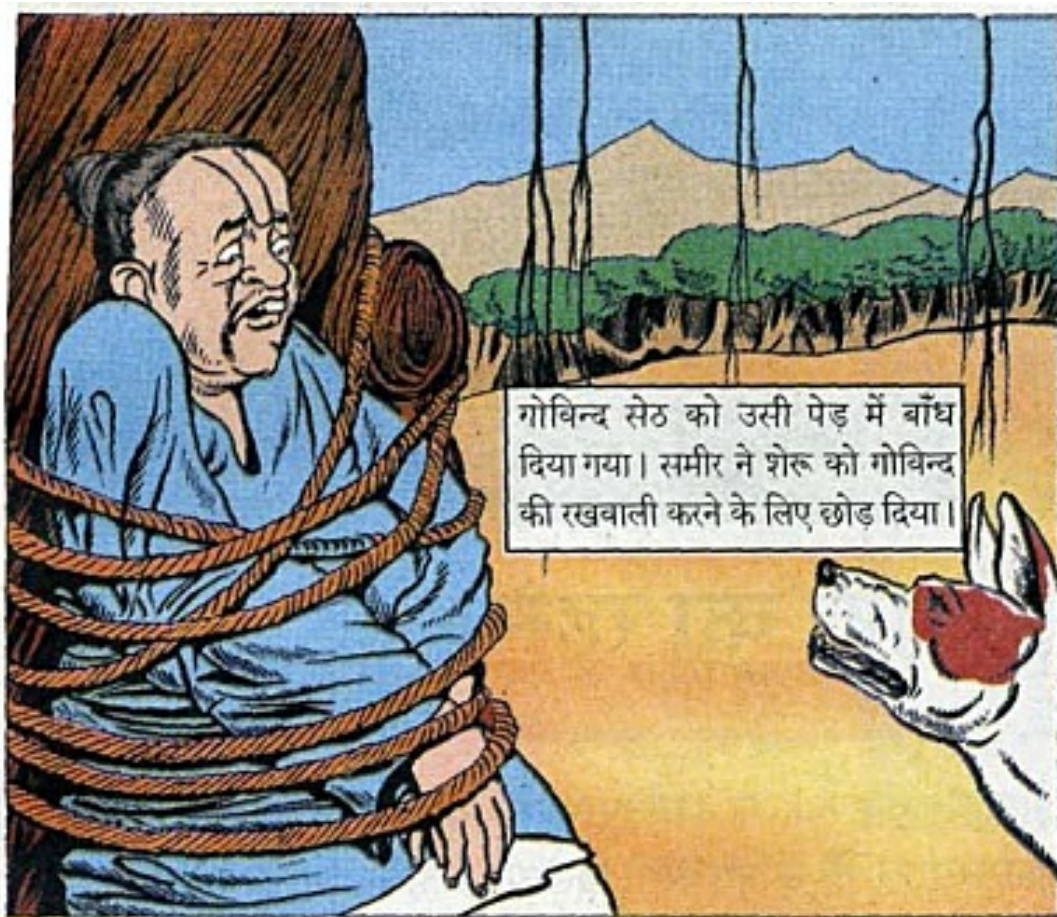
गोबिन्द सेठ को उसी पेड़ में बाँध दिया गया। समीर ने शेरू को गोबिन्द की रखवाली करने के लिए छोड़ दिया।

मेरी बात सुनिए मित्रों! भूत का नाटक समाप्त हो गया। मैं आपको उसे दिखा सकता हूँ कि भूत कौन है? मेरे साथ आओ!
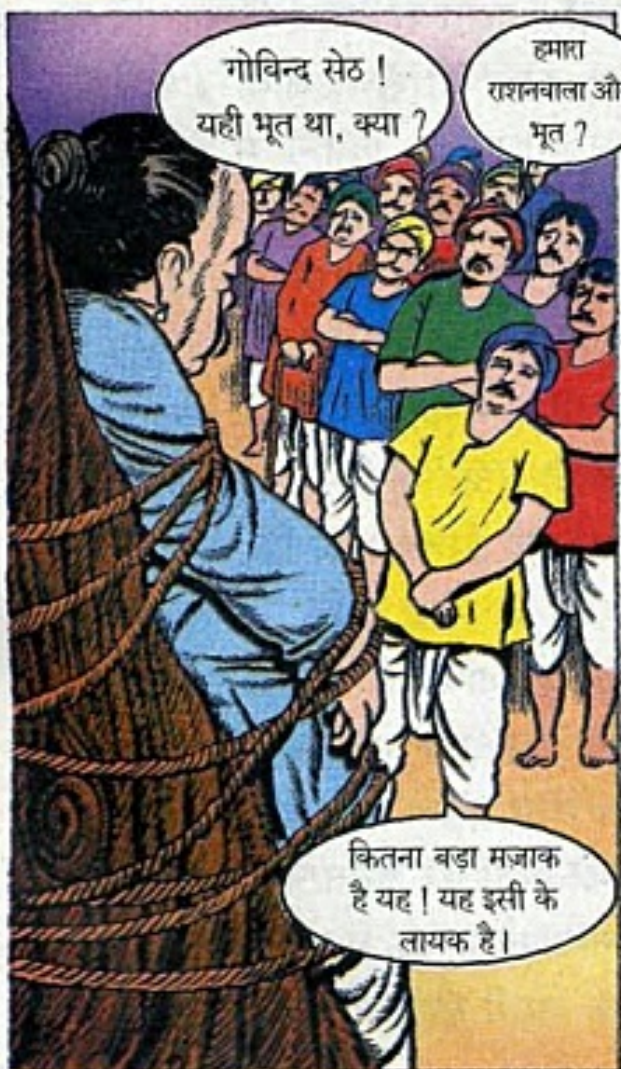
गोबिन्द सेठ! यही भूत था, क्या?
हमारा राशनवाला और भूत?
कितना बड़ा मज़ाक है यह! यह इसी के लायक है।

गलत रास्ते पर चलकर पिता ने जो कमाया, गोबिन्द सेठ भी उसी रास्ते पर चलकर आप लोगों से छिपाकर उसने सारा धन रख लिया। वह आप लोगों को अपने पिता के भूत का पहनावा पहनकर मूर्ख बना रहा था। जब तक आप भूत-प्रेत से डरते रहेंगे तब तक आप लोगों को मूर्ख बनाया जाएगा। एक निडर और दृढ़ जीवन जीने का प्रयत्न कीजिए। मैं आप सभी को शुभकामनाएँ देता हूँ।
- समाप्त -
(आगे एक और साहसिक कार्य)
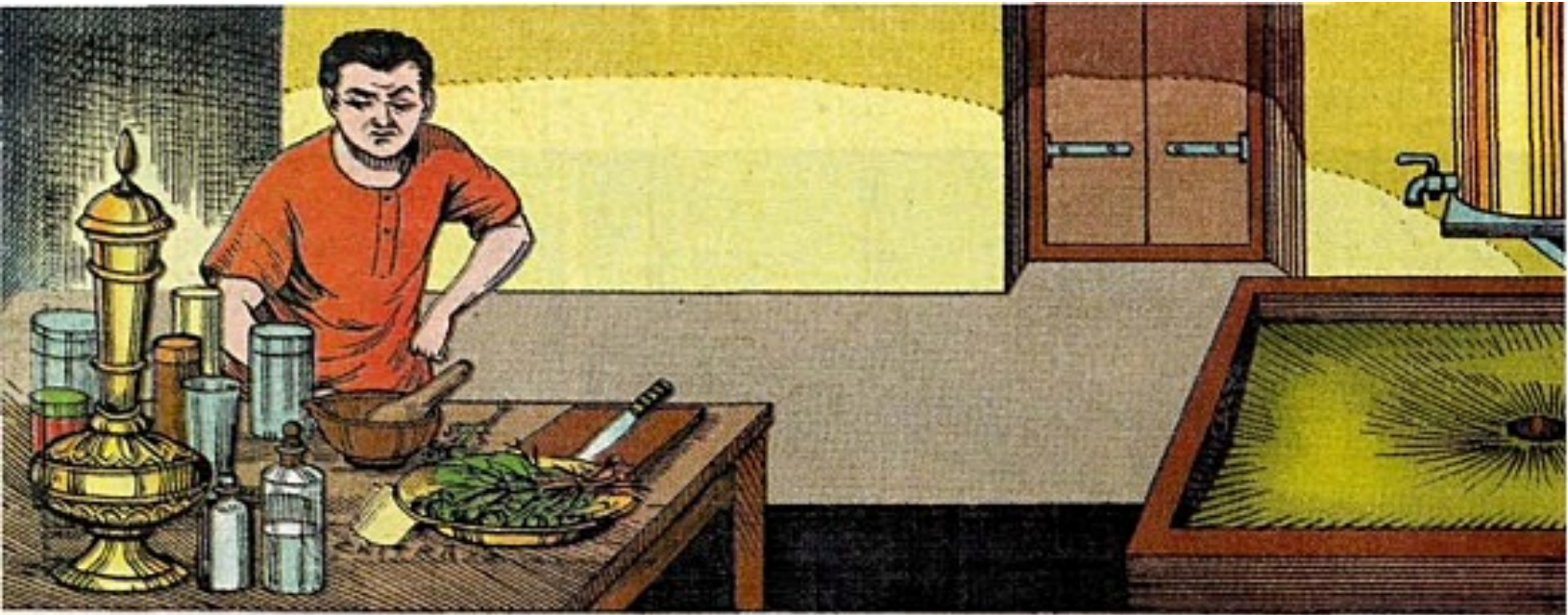
जड़ी बूटी का रहस्य

कुछ साल पहले कपिशा नगर में माधव नामक एक धनी व्यक्ति रहता था। उसका ससुराल भी संपन्न था। वह चाहता तो हाथ पर हाथ धरे आराम से जीवन काट सकता था। लेकिन माधव वैसे चुप बैठनेवाला न था। वह रसायन विद्या में पारंगत होना चाहता था। उसने तांबे को सोना बनाने के कई प्रयोग किये। इस काम के पीछे उसने अपना सारा धन खर्च किया और गरीब हो गया।

माधव की पत्नी बड़ी विवेकशील थी। उसने पहले ही समझ लिया था कि उसका पति सोने के पीछे पागल हो, अपनी बची-खुची जायदाद समाप्त कर देगा। वह जानती थी कि यह पागलपन उसे ही नहीं, बल्कि सारे परिवार को खतम कर देगा। स्थिति गंभीर हो जायेगी कि खाने-पीने के लिए भी कुछ बचा नहीं रहेगा। उसने मान लिया कि अपनी तरफ़ से जितना भी हो सकता है, करेगी और परिवार को नाश होने से बचा लेगी।

इसलिए उसने गृहस्थी के निर्वाह में बड़ी दिलचस्पी दिखायी। लेकिन उसकी सारी मेहनत बेकार हो गयी। दूसरों की भांति उसका पति भी कोई व्यापार करता तो सुधर जाता। सोने के पीछे पागल माधव के दिमाग में पत्नी की चेतावनियाँ असर न कर पायीं, उल्टे सारी जायदाद एक तरफ़ कपूर की भांति जलती जा रही थी। वह अपनी पत्नी से बराबर यही कहता, शोर न मचाओ। सोना बनाने की विद्या बहुत-कुछ हाथ लग गयी है। अब थोड़ी-सी ही कसर बाकी है। माधव को पूरा विश्वास था कि सोना बनाने के काम में उसे ढ़ेर सोना उसके पास होगा और वह मालामाल हो जायेगा। किन्तु उसे क्या पता था कि सोना एक मृगतृष्णा मात्र है, जिसका पीछा करता हुआ वह कहीं का न रहेगा।

माधव की पत्नी की हालत बड़ी खराब होती गयी। उसने अपने मायके में जाकर अपने पिता से गृहस्थी के बारे में सारी बातें बतायीं। इस पर

पचीस वर्ष पहले 'चन्दामामा' में प्रकाशित पुरानी कथा

उसने अपनी बेटी से कहा- "मैं दामाद से बात करूँगा। तुम घबराओ नहीं; वह संभल जायगा।"

ससुर का निमंत्रण पाकर माधव ससुराल पहुँचा।

"क्यों, तुम्हारी रसायन-विद्या कहाँ तक आयी है?" ससुर ने पूछा ।

माधव ने उत्साह में आकर, उसने जो जो प्रयोग किये थे, सबका विवरण कह सुनाया ।

"अरे! तुमने असली बात भूलकर कई साल बरबाद कर दिये! तुमको मेरी सलाह पहले ही लेनी थी । मैं ने भी इस विद्या के बारे में बहुत कुछ अध्ययन किया और सोच-समझ लिया है। मैं अब भी कह नहीं सकता कि तुम्हारा काम आसान है । तुमको कई साल सहनशीलता के साथ यह काम करना होगा । मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मैं मेहनत भी नहीं कर सकता। यह काम तुमसे ही बनेगा । इसलिए मैं इसके संबन्ध में जो रहस्य जानता हूँ, वे तुम्हें बता देता हूँ । मेरे कहे अनुसार करते जाओ तो तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होगी।" ससुर ने समझाया ।

माधव ने बड़े ही भक्तिभाव से कहा- "ससुरजी! आपके कहे अनुसार बड़ी श्रद्धापूर्वक यह काम करूँगा । विजय के मिलने तक नहीं छोडूँगा ।"

"तुम आज तक तांबे को सोना बनाने की कोशिश में लगे थे न? इसके लिए आवश्यक सारी सामग्री मेरे पास है । सिवाय एक वस्तु के। हमारी सहनशीलता की जाँच करके अधिक श्रम देनेवाली चीज़ ही यही है । परंतु इसको प्राप्त करना असंभव नहीं है ।" ससुर ने कहा ।

"ससुरजी! वह वस्तु क्या है? बताइये!" माधव ने पूछा ।

"वैसे कोई खास बात नहीं ! केले के पत्तों पर जो सींगुर होता है, उसे देखा है न? उसे लगभग पौन वीशा इकट्ठा करना होगा । उसमें तक़लीफ़ यह है कि उस सींगुरवाले पौधों को तुम्हें खुद अपने हाथों से मंत्र पढ़ते हुए रोपना होगा । वह मंत्र मैं तुमको सिखाऊँगा ।" ससुर ने कहा ।

"कई पौधों को रोपना होगा न?' माधव ने पूछा ।

"इसमें क्या संदेह है? कई एकड़ बाग लगाना होगा, नहीं तो पौन बीशा सींगुर तुम्हें कहाँ से मिलेगा?" ससुर ने कहा ।

खेत खरीदकर केले के बाग लगाने में ससुर नें माधव की मदद की । मजदूरों ने जमीन समतल करके केले के पौधे लगाने के लिए गड्ढे खोदे । माधव ने ससुर के कहे मुताबिक़ मंत्र पढ़ते केले

के पौधे खुद रोपे । माधव की पत्नी ने भी इस काम में बड़ी दिलचस्पी दिखायी ।

पौधे बड़े हो गये । माधव दिन-भर बाग में घूमता, हर पत्ते से सींगुर इकट्ठा करता । दो-तीन दिन बाद जब वह उस सींगुर को तौलकर देखता तो उसे ससुर की बातें याद आ जाती कि बीशा भर सींगुर इकट्ठा करने में काफ़ी समय लगेगा । सहनशीलता भी चाहिए ।

माधव की दृष्टि केले के पत्तों पर स्थित सींगुर पर थी । उसकी पत्नी रोज केले के पत्ते, गौद और फूल बेचकर काफ़ी धन इकट्ठा करने लगी । माधव का ध्यान बिलकुल इस ओर न गया । वह हमेशा वही सोचा करता कि कब पौन बीशा सींगुर होगा और कब तांबे को सोना बना सकूँगा ।

तीन साल बीत गये ; परन्तु माधव का लक्ष्य पूरा होता दिखाई न दिया । उसकी पत्नी बगीचे के द्वारा जो ब्यापार करती थी वह खूब चमक गया । गाड़ियाँ भर-भरकर केले, और पत्ते दूर-दूर के बाजारों में बिकने के लिए जाते थे । उस प्रदेश में उसकी तुलना करनेवाला कोई बगीचा न था ।

और दो साल बीत गये । माधव अपने काम में कामयाब हुआ । उसने पौन बीशा सींगुर इकट्ठा किया था । उसने उसे अपने ससुर के सामने रखते हुए कहा-"लीजिये! आपके कहे मुताबिक़ मैंने सींगुर इकट्ठा किया ।"

"शाबाश! अब तुम्हें पैसे की कमी न रहेगी ।"

यह कहते हुए ससुर हँस पड़ा । फिर अपनी बेटी की ओर मुड़कर पूछा - "बेटी ! केले के बगीचे से तुमने कितने रुपये कमाये?"

माधव की पत्नी रुपयों की थैली ले आयी और बोली-"आप ही हिसाब कीजिये ।"

माधव की समझ में यह बात न आयी कि केले के बगीचे से कमाई कैसे? वह केवल सींगुर की बात ही सोचा करता था । ससुर ने थैली से रुपये नीचे गिराये और गिनकर कहा- "बीस हजार रुपये!" उस धन को देख माधव आश्चर्य चकित रह गया ।

"मेरी सलाह कैसे काम दे गयी? तुम चाहो तो इस चांदी से खरा सोना खरीद सकते हो, गहने बना सकते हो, जो चाहो खरीद सकते हो । यह मान जाओगे न? गत पांच साल में तुमने जो मेहनत की उसका फल मिल गया । तुमने जो रासायनिक प्रयोग किये उससे यह प्रयोग अच्छा है न?" ससुर ने कहा ।

माधव की आँखें खुल गयीं । उसकी समझ में आ गया कि वह जो भी कर रहा था, वह व्यर्थ प्रयास था। जान गया कि अब तक वह हवा में क़िले बना रहा था और यही सिलसिला जारी रहा तो उसके परिवार का नाश निश्चित था।

ससुर ने भले ही उसे धोखा दिया हो, पर अच्छा सबक़ सिखाया । उसे बड़ा लाभ ही हुआ। कामधेनु जैसे बगीचे के होते उसे पैसे की क्या कमी है? उसने अपने ससुर से क्षमा मांगी और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। इसके बाद वह बगीचे की देखमाल करते आराम से दिन काटने लगा ।

मेहनत की कमाई में जो मिठास है, वह भला और कहाँ मिल सकती है ? असंभव को संभव बनाने के पीछे दौड़ना पागलपन नहीं तो और क्या है ? मनुष्य का एक लक्ष्य अवश्य हो, किन्तु उसका परमार्थ भी हो, तभी वह लक्ष्य उत्तम कहा जा सकता है।

प्रयोग अवश्य किये जाएँ, पर उनसे प्राप्त लाभ सीमित न हो। उन प्रयोगों से मनुष्य जाति का कल्याण हो, यही ध्येय होना चाहिये। इसके द्वारा एक आदर्श की भी स्थापना की जा सकती है।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

जनवरी आते ही भारतवासी गणतंत्र दिवस की सुन्दर सैनिक प्रदर्शन को देखने के लिए उत्सुक रहते हैं। चलो इसे एक दूसरे तरीके से प्रश्नोत्तरी की भाँति देखें।

१. पहला सैनिक प्रदर्शन कब हुआ ?

२. इस प्रदर्शन की सलामी किसने ली ?

३. जब वे सलामी मंच पर आते है तो उनका स्वागत कौन करता है ?

४. प्रदर्शन कहाँ से आरम्भ होकर कहाँ समाप्त होता है ?

५. यह प्रदर्शन एक प्रभावशाली उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह किस स्थान पर होता है ? वहाँ क्या होता है ? कौन महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है जो उत्सव में भाग लेता है ?

६. कुछ अवसरों पर अन्य उत्सव भी मनाए जाते हैं जिससे झंडा फहराने के बाद सलामी दी जाती है। इसे क्या कहते हैं ?

७. गतवर्ष गणतंत्र दिवस प्रदर्शन के मुख्य अतिथि कौन थे?

८. दूसरे राज्य और केन्द्र शासित राज्य किस प्रकार इस प्रदर्शन में भाग लेते हैं ?

९. प्रदर्शन में बच्चों की परेड का नेतृत्व कौन करता है ?

१०. प्रदर्शन का आखिरी कार्यक्रम क्या होता है ?

११. गणतंत्र दिवस के तीन दिन बाद कुछ कार्यक्रम किए जाते है जो प्रदर्शन का हिस्सा नहीं होते। उन्हें क्या कहते हैं और इसका अर्थ क्या है ?

१२. जनवरी २६ का अर्थ क्या है ?

(उत्तरें अगले अंक में)

Marketed by Gujarat Co-operative Milk Marketing Federation Limited, Anand-388 001. E-mail: cheese@amul.com For FREE home delivery of our products in select cities visit the Amul Cyberstore at www.amul.com

daCunha/ACS/2/20

अछूत

पवित्र गोदावरी के तट पर एक साधू ने छोटा-सा एक कुटीर बनवाया और उसी में रहने लगा। आसपास के गावों की जनता उसका बड़ा आदर करती थी। उनमें उसके प्रति भक्ति-भाव था। इस बात पर वे फूले नहीं समाते थे कि इतने बड़े साधू उनके समीप ही रह रहे हैं। उसकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वे हमेशा आगे रहते थे।

साधू समझ बैठा कि जनता के हृदय में मेरे प्रति बड़ा ही आदर है और मैं जो भी कहूँगा, वही उनके लिए वेदवाक्य है। वह हर दिन प्रात:काल ही उठकर दैनिक दिनचर्याओं से निवृत होने के बाद नदी में स्नान करने जाता था। स्नान पूरा करने के बाद नदी से ही सटकर पड़े एक बड़े पत्थर पर बैठकर ध्यान में लग जाता था। उसने पहले ही से लोगों को कह रखा था कि उस समय कोई भी वहाँ न आयें और उसका ध्यान भंग न करें।

ग्रामीण उसके आदेश का पालन करते थे। कोई भी उस समय उस स्थान के इर्द-गिर्द जाता नहीं था। सबेरे ही कोई नहाना चाहे तो वह उस जगह से दूर जाकर नहा लेते थे।

एक दिन सबेरे-सबेरे साधू यथाप्रकार नहा-धोकर पत्थर पर बैठे ध्यान में मग्न हो गये। उसे लगा कि इसी ओर कोई नदी में कूदा तो उसने चौंककर आँखे खोली। देखा कि एक लड़का बड़े ही उत्साह के साथ नहा रहा है। ज़ोर-शोर से हाथ-पाँव हिला रहा है, जिसके कारण पानी की छीटें साधू पर आकर गिरने लगे। साधू क्रोधित हो उठा और कहने लगा, "अछूत कहीं के। इतना घमंड! देखते नहीं कि मैं ध्यान में मग्न हूँ!"

नदी में तैरते हुए उस लड़के ने साधू की बातों की परवाह नहीं की क्योंकि वह बड़े ही उत्साह के साथ अपनी धुन में मस्त था। सच कहा जाए तो तैरते समय जो आवाज़ निकलती है, उस आवाज़ में साधू की बातें उसके कानों में स्पष्ट रूप से नहीं पड़ीं।

नहा लेने के बाद लड़का जब किनारे पर आ

गया तब साधू उसके पास गया और उसके गाल पर चपत जमाकर कहा, "शैतान कहीं के!"

इतने में एक युवक हाँफता हुआ वहाँ आया और साधु से थोड़ी दूर खड़े होकर कहने लगा, "स्वामी, क्षमा कीजिये, यह मेरी पत्नी का भाई है। किसी और गाँव का है। आपके ध्यान के बारे में यह कुछ नहीं जानता। यह दिखायी नहीं पड़ा तो मैं यहाँ दौड़ा-दौड़ा आया। क्योंकि इसे तैरना बहुत पसंद है, इसलिए मैं उसे ढूँढता यहाँ आ गया। मेरा अंदाजा सही निकला, यह यहीं है। अंदर ही अंदर मुझे इस बात का भी डर था कि कहीं आपके ध्यान को भंग न करे। आने में थोड़ी देरी हो गयी। क्षमा कीजिये।"

"यह तुम्हारा साला है?", कहता हुआ साधू शांत हो गया। साधू को यह जानने मे देर नहीं लगी कि आया हुआ युवक अछूत है, तो उसने भांप लिया कि वह लड़का भी अछूत है, क्योंकि यह उसका साला है। साधु फिर से नदी में जाकर स्नान करके लौटा।

लड़का गौर से यह सब कुछ देख रहा था। वह भी नदी में कूदा और नहाने लगा। बाहर आने के बाद उसके बहनोई ने उससे पूछा, "फिर से तुमने क्यों नहाया?"

"स्वामी ने भी एक बार नहा लेने के बाद माथे पर भस्म मल लिया। फिर भी उन्होनें दूसरी बार क्यों नहाया?", लड़के ने पूछा।

"क्या तुम भूल गये कि हम अछूत हैं। चपत जमाते समय उन्होने तुझे छू लिया, इसीलिए उन्होने फिर से नहाया", बहनोई ने साले को समझाया।

"मेरे गाल पर जब वे चपत मार रहे थे तब वे मुझे शैतान लगे। शैतान भी तो अछूत होता है, इसलिए मैं भी दूसरी बार नहाकर आया", लड़के ने कहा।

लड़के की बात सुनकर साधू को लगा, मानों किसी ने उसके गाल पर ज़ोर से तमाचा मारा हो। क्षण भर के लिए हक्का-बक्का रह गया। फिर वह लड़के के पास आया और कहा, "तुमने ठीक कहा बेटे, शैतान ही मुझपर हावी नहीं था, अहंभाव व क्रोध ने भी मुझे अपने वशीभूत कर लिया। अछूत तुम नहीं, मैं हूँ।" कहते हुए साधू ने उसका आलिंगन किया।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. 82 (पु.न. 92), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -600 097.

जो हमारे पास इस माह की 25 तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर 100/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

नवम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

दीपक चंदालिया
ए-106, शास्त्री नगर,
पन्ना भवन
भिलवारा - 311 001. (राजस्थान)

विजयी प्रविष्टि :

पहला चित्र : भाई पकड़े साइकिल, बहना है सवार

दूसरा चित्र : सागर के बीच में, साथी बने पतवार

चांदामामा वार्षिक शुल्क

भारत में 120/- रुपये डाक द्वारा

Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED for details address your enquiries to:

New 82 (Old 92) Defence Officers Colony, Ekkattuthangal, Chennai -600 097.

MILLENNIUM OFFER

GOODIES for KIDDIES
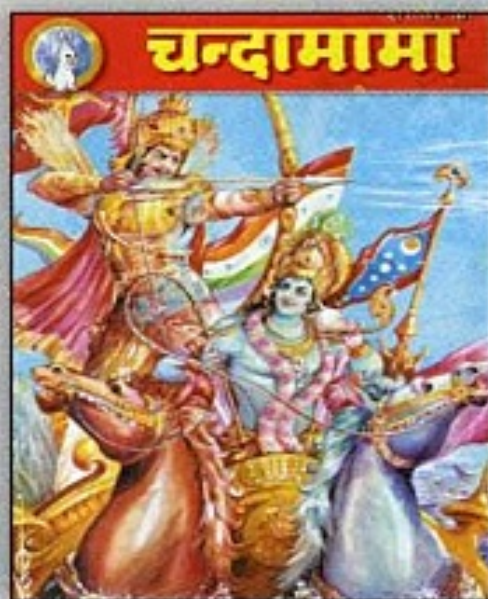
Avail our
Special Gift Offer

A DASH! watch free with
3-year subscription to
CHANDAMAMA
AVAILABLE IN 12 LANGUAGES

Remit Rs. 360/- by Draft or M.O favouring
Chandamama India Limited
to:
Publication Division,
Chandamama India Limited,
82, Defence Officers' Colony,
Ekkatuthangal, Chennai 600 097.
E-mail: ***subscription@chandamama.org***

FREE

The models shown here are only indicative.

DASH!
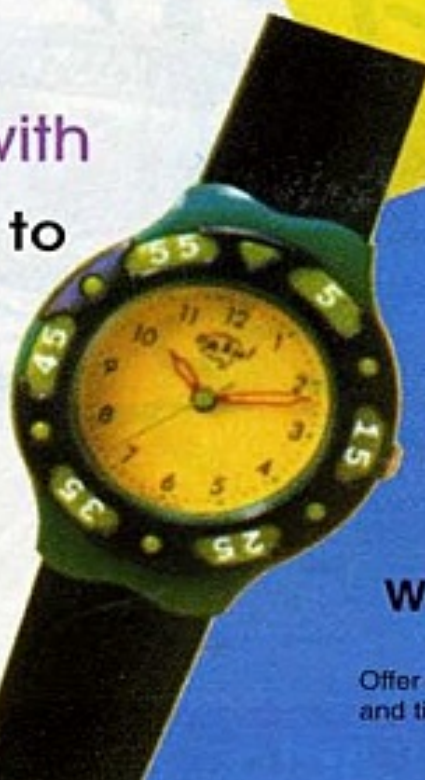
Wow watches from Titan

Offer valid on 3-year subscriptions within India and till stocks last. Conditions apply.

CHANDAMAMA (Hindi) JANUARY 2001 Registrar of Newspapers, India RN1087/57

Maha Cruise

Ahoy!

nutrine MAHA LACTO

Nutrine Maha Lacto. The Best Lacto in Town.